ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 15 अंक-14 अक्टूबर-II, 2014 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹ 8.00

निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए पथभ्रमित न हो मीडिया

सकारात्मक परिवर्तन के लिए जनसंचार माध्यमों की भूमिका विषय पर चार दिवसीय महासम्मेलन में दो हज़ार मीडियाकर्मियों ने किया विचार-मंथन

मीडिया सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय मंत्री श्रीपद नायक, राजीव रंजन नाग, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. ओम प्रकाश, ब्र.कु. शीलू तथा अन्य।

शांतिवन। आध्यात्मिकता, अंध-विश्वास तथा औपचारिकता का मात्र उदाहरण नहीं है बल्कि शान्ति, प्रेम, सहिष्णुता, भाईचारा आदि का सम्मिलित रूप है। अध्यात्म भारत की आत्मा है, ऐसा विवेचन शांतिवन परिसर में केन्द्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्रीपद नायक ने मीडिया सम्मेलन, 'सकारात्मक परिवर्तन के लिए जनसंचार माध्यमों की भूमिका' में दिया। उनका कहना था कि विश्व भर में राजयोग चिंतन भारत की समृद्धि, संस्कृति और लोकाचार का एक अनुपम उदाहरण है। ब्रह्माकुमारीज़ विश्व की एक ऐसी संस्था है जहां नि:स्वार्थ व समरसता के आधार से सबको सम्मान दिया जाता है व सेवा की जाती है। मीडिया महासम्मेलन सकारात्मक बदलाव का मजबूत आधार बनेगा। जिन परिस्थितियों से पूरा देश गुज़र रहा है उनमें परिवर्तन लाने के लिए जनसंचार माध्यमों में सकारात्मकता को प्रोत्साहित किया जाना अति आवश्यक है।

मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष माननीय ब्र.कु. ओम प्रकाश ने कहा कि मीडिया एक मिशन के रूप में आया, लेकिन एक उद्योग के रूप में स्थापित हो गया। मीडिया का मुख्य काम सूचना, शिक्षा और मनोरंजन है। वो चाहे तो इसके माध्यम से अपनी कलम की ताकत को सबके सामने रख सकता है।

इसी क्रम में मीडिया प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. करुणा ने कहा कि मीडिया एक स्तंभ की तरह है और वो स्तंभ अब हिलने लगा है, उसे थमाने की ज़रूरत है। अच्छे दिन लाने के संकल्प में जनता के साथ मीडिया को भी अपनी सहभागिता दर्ज़ करानी चाहिए क्योंकि सत्ता की शक्ति आध्यात्मिकता है, इसलिए जितना आध्यात्मिकता का प्रसार किया जायेगा उतनी सत्ता को सही दिशा मिलेगी। प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि मीडिया एक लोक-आकांक्षा के रूप से शुरु हुआ और बाद में एक बाज़ारवादी सोच पर जाकर खत्म हुआ। अखबार और कलम की ताकत के बारे में उन्होंने प्रमुख कवि एवं व्यंग्यकार राहत इंदौरी साहब का उदाहरण देते हुए कहा कि एक अखबार हूँ मैं, क्या औकात है मेरी। तेरे शहर की नींद उड़ाने के लिए काफी हूँ। जिस दिन आपमें बेचैनी पैदा होगी उस दिन यह अंतराल कम हो जायेगा। साथ ही ब्र.कु. शीलू ने सभा में उपस्थित सभी आगंतुकों एवं मेहमानों को राजयोग का अभ्यास करया।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने आशीर्वचन में इस सम्मेलन को सही रूप से सफल होने की प्रेरणा प्रदान की और कहा कि आध्यात्मिक भूमि कहे जाने वाले भारत में स्वर्ग का स्वरूप तेज़ी से बिगड़ रहा है। नर्क को स्वर्ग बनाने की चुनौती का सामना करने में मीडिया को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

प्रेस परिषद के सदस्य राजीव रंजन नाग, बैंगलोर से आई प्रो. माया चक्रवर्ती, गोवा के पत्रकार सागर जावेड़कर और देवी अहिल्या वि.वि. के विभागाध्यक्ष डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि समाज और देश के हित को सर्वोपरि मानते हुए आप मीडियाकर्मी अपने चिंतन व लेखन में सकारात्मकता लायें। अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए मीडिया प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. शान्तनु ने कहा कि मीडिया स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के अभियान को आगे बढ़ाने में सहयोगी बनेगा।

मीडिया जनतंत्र में एक खबरपालिका के रूप में स्थापित हो

शांतिवन। क्या हम मीडिया कर्मियों को सशक्त कर सकते हैं? इस विषय पर शाम पाँच बजे के सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में महामेधा डेली के सलाहकार संपादक मधुकर द्विवेदी ने कहा कि मीडिया सिर्फ कहने मात्र ही लोकतंत्र का चौथा स्तंभ रह गया है। ऐसा कोई प्रावधान संविधान में नहीं है जिसके तहत

इसको चौथा स्तंभ माना जाये।

उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मीडिया को न्यायपालिका व कार्यपालिका की तरह अब खबरपालिका बनकर कार्य करना होगा। उन्होंने इसके लिए बहुत सुंदर शायरी के साथ इसको जोड़ा और कहा, धरा बेच देंगे, गगन बेच देंगे, कली बेच देंगे, चमन बेच देंगे। कलम के सिपाही अगर सो गये तो, वतन के मसीहा वतन बेच देंगे। इन्हीं वक्तव्यों से उन्होंने मीडिया कर्मियों के अंदर जोश भरा।

जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सहायक प्रो. डॉ. सुरेश वर्मा ने कहा कि हम वो देखें जो लोग नहीं देख पा रहे हैं, लेकिन हमारी विडंबना ये है कि हम वो नहीं देख पा रहे हैं और हम दुनिया की हाँ में हाँ मिलाते हैं। मीडिया कर्मी को जिज्ञासा, उमंग-उत्साह और निश्चय के साथ आगे बढ़ना चाहिए। उसका अध्ययन कभी रुकना नहीं चाहिए।

कानपुर से आये केशव दत्त चंदोला जो लघु एवं मध्यम न्यूज़ पेपर के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं ने कहा कि हम ब्रह्माकुमारीज़ की तरह जगह-जगह जाकर सभी को जागरुक कर उनके अंदर एक जिज्ञासा पैदा करते हैं कि वे भी बिना रुके, बिना थके अपनी बात कह सकें। उनको सशक्त बनाना ही हम मीडिया कर्मियों का उद्देश्य होना चाहिए।

जयपुर की उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. सुषमा ने सभी को आत्मचिंतन और परमात्मचिंतन के द्वारा कलम में ताकत लाने के लिए राजयोग का सहज अभ्यास कराया। साथ ही साथ प्रतिदिन इस अभ्यास को करने की प्रेरणा दी।

मीडिया कॉन्फ्रेंस में सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए कलाकार ।

इन साईड पर विशेष...

उठो... सम्पूर्णता आपका आह्वान कर रही है...।
-पेज नं 5 पर...

पावरफुल वन फीलिंग को फिल करो
-पेज नं 2 पर...

दस विकारों को हरा, मनाओ दशहरा
-पेज नं 6 पर..

भूल हो जाने पर....

बिना हेलमेट पहने हुए मोटरबाईक चलाने वाले एक युवक को पुलिस रोकती है। उसके पिता एक बड़े एन.जी.ओ. के अध्यक्ष है। सरकार तक भी उनकी बहुत पहुँच है। उस युवक ने कहा ''आप मुझे रोक रहे है! मुझे बहुत ही महत्वपूर्ण सरकारी मीटिंग में शामिल होना है। ज़्यादा कुछ बोलेंगे तो.....'' पुलिस ने कहा ''आप क्या कर लेंगे? मैं आपकी बात क्यों मान लूँ?''

''आपको सामान्य और वी.आई.पी. के बीच का भेद समझना चाहिए! कभी भी सस्पेन्ड होने की नौबत आ जायेगी'' युवक बेफिकर होकर कहता है...।

- ब्र. कु. गंगाधर

''तो..तो अब मुझे आपको कायदे का भान कराना ही होगा! मैं आप पर दंडात्मक कार्यवाही करुँगा'' पुलिस ने कड़क होकर कहा....। तब वो युवक ढ़ीला पड़ गया।

मनुष्य को स्वयं की भूल समझ आ जाने पर विनय-विवेक से नहीं चूकना चाहिए, यही है संस्कारिकता। मनुष्य का असली रूप झगड़े के समय ही प्रकट होता है। शिक्षित और ऊँची पहुँच रखने वाले मनुष्य सहजता से भूल स्वीकारने में गलत दलीलबाज़ी में उतर जाते हैं।

मई-जून की गर्मी के बारह बजे की धूप में आपने फर्ज़ अदा करते पुलिस को कभी शाबाशी दी है? सिर्फ ट्रैफिक पुलिस के बारे में ही नहीं, घर, परिवार, सामाजिक जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी हम भूल को स्वीकार न करना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं।

मानव की भूल ने ही इस संसार को बिगाड़ा है, उनकी सुख-शान्ति छीन रखी है। 'हरिजन सेवक' के एक अंक में गांधी जी ने लिखा था कि भूल करना, यह मानव स्वभाव सहज है, लेकिन भूल को स्वीकार कर उसी तरह आचरण करना जिससे कि वो भूल दोबारा फिर से न हो उसका नाम मर्दानगी है।

'गीता प्रवचन' में विनोबा ने कितनी सुंदर बात कही है – ''भूल हो जाने का ख्याल होने के बाद क्या आप ऐसा ही आचरण फिर से करते रहेंगे? गांधी जी के मतानुसार भूल को स्वीकार करना, ये कचरे को झाड़ू लगाकर हटाने के समान है। भूल का भान हो जाने को अपना नया बचपन या प्रभात मानें।

कैसे भूल को सुधार सकते हैं, उसका प्रेरक दृष्टांत विदेशी लेखक डेल कार्नेगी का है। कार्नेगी भूल के संबंध में बताते हैं कि ''मेरे घर से एक मिनट के अंतराल पर पैदल चलकर जंगली लकड़ियाँ मिले ऐसा नैसर्गिक वन है। मैं कई बार वनभूमि में अपने श्वान (कुत्ते) को लेकर निकल पड़ता हूँ। रेक्स मेरा छोटा सा बॉस्टन बुल डॉग है, बहुत ही प्यारा, स्नेही, मैत्रीपूर्ण और निर्दोष। मैं उसके गले में पट्टे की चेन बांधे बिना ही अपने साथ ले जाता हूँ।

'एक दिन हमें पार्क में एक घोड़ेसवार पुलिस मिल गए, जिसे अपना अधिकार जमाने की खुमारी हो गई थी। उसने मुझे चेतावनी देते हुए कहा: ''आपने अपने कुत्ते को ऐसे बिना पट्टे के चेन से फ्री छोड़ दिया है, इसका क्या अर्थ है? क्या समझते हो तुम?

'' हाँ, यह गुनाह है, ये मुझे पता है, परंतु मेरा कुत्ता किसी को नुकसान नहीं पहुँचायेगा ऐसा मेरा मानना है'' मैंने कहा।

''आप क्या खाक मानते हो! आपने क्या विचार नहीं किया है! और कानून को आप क्या मानते हो या उसके बारे में ज़रा भी विचार नहीं करते। अभी मैं तुम्हें जाने देता हूँ लेकिन दूसरी बार इस कुत्ते को पट्टे की चेन बिना ऐसे खुला घुमते हुए देखा तो सीधे तुम्हें मजिस्ट्रेट के सामने ला खड़ा कर दूँगा।

मैंने कहा कि मैं हर नियम का नम्रतापूर्वक पालन करुँगा। ''मैंने अपने कुत्ते को पट्टा पहनाया भी, लेकिन मेरे कुत्ते को पट्टा पसंद नहीं था इसलिए मैंने विचार किया कि देखा जाएगा! हम एक दिन मस्ती कर रहे थे, वहाँ ही कानून के महारथी को घोड़े पर सवार होकर आते देखा और मेरा कुत्ता बिना पट्टा पहने आगे चल रहा था!''

''मुझे लगा कि आज तो जान से मारे गये!'' इसीलिए पुलिस को अवसर दिये बिना ही मैंने कहा: ''ऑफिसर, आज तो आपने मुझे रंगे हाथों पकड़ ही लिया। मेरा गुनाह मुझे कबूल है, मेरे पास उसके लिए कोई दलील या बहाना नहीं है। आपने मुझे अच्छी तरह कहा था कि कुत्ते को चेन बिना साथ में लायेंगे तो आपको छोड़ूँगा नहीं।''

''हाँ, आपकी बात सच्ची है...लेकिन मुझे लगता है कि आपको हाथ में चेन लेकर घूमना अच्छा नहीं लगता है! यहाँ --शेष पेज 9 पर..

कुछ भी हो जाए हिम्मत नहीं हारो

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

त्याग एक भाग्य है, पर वास्तव में जिसको त्याग वृत्ति वाला बनना है तो बाबा से जो प्राप्तियाँ हुई हैं उन्हें इमर्ज करो तो कहीं आँख नहीं डूबेगी। जो कभी भी न डिस्टर्ब होता है, न डिस्टर्ब करता है ऐसा कोई है तो मुझे बतावे।

साकार मुरलियों में बाबा ने जो कहा है सो हो रहा है। साकार मुरली को गहराई से पढ़ना चाहिए, इसे अच्छी तरह से समझो। जिसने साकार मुरली को समझा उससे पता चलता है कि निश्चय क्या होता है, परमात्मा क्या होता है, हम आत्मा क्या हैं? साकार को देखते हैं तो तीनों ही इकट्ठे हैं, मैंने तो साकार को देखा था ना, तब भी ऐसा था अब भी ऐसा है। साकारी भासना भी है और साकार, अव्यक्त कैसे बना वो भी भासना है, निराकार को कैसे साथी बनायें, यह भी अनुभव है। अब सब बाबा की रचना को देख आप सबके लिए बहुत प्यार पैदा होता है, जैसे मैंने बाबा से प्यार लिया है, ऐसे तुम भी लो और सबके साथ मिलनसार होके रहो, यह है निरंतर योग। प्यार इसलिए है क्योंकि बाबा के बच्चे हैं, हम गोप-गोपियाँ हैं इसलिए मुरली से प्रेम है, प्रीत बुद्धि विजयंती। कभी भी कोई संकल्प निराशा का नहीं आयेगा। कुछ भी हो जाए हिम्मत नहीं छोडेंगे। कोई मुझे कितना भी बुरा समझे मैं जैसा हूँ, वैसा बाबा का हूँ। भले कानों में कितनी भी बातें आई हों, कान मेरे इसलिए नहीं हैं। जो कुछ मेरे से भूल होती है मैं बाबा को सुनाती हूँ, तो बाबा मुझे माफ करता है। परन्तु और कोई बहन भाई है सूक्ष्म भले कुछ भी करे, माफ करना आना चाहिए। मैंने कोई भूल की तो मैं भगवान से माफी मांगती हूँ। अपने से भी कहती हूँ मेरे से भूल हुई है तो लगता है, न मैं अपने को माफ कर सकती हूँ, न बाबा मुझे माफ करता है। समझो, मेरे से किसी को तकलीफ हुई बाबा माफ नहीं करेगा। जिसका जिसके साथ कुछ ऐसा व्यवहार होता है, तो वो उससे ही माफी मांग लेवे, तो वह थोड़ा हल्का हो सकता है। लेकिन अभिमान के कारण कहेंगे इसने किया तब मैंने कहा, ऐसे थोड़ेही उसको कहा...ऐसे अभिमान वाले फिर निरंतर याद में नहीं रह सकेंगे। आत्मा को देह-अभिमान के वश गफलत करने की आदत हो गई है, भले बहुत देह-अभिमान गया है पर थोड़ा-सा इतना भी अंदर रहा है जिसकी कभी फीलिंग आ जाती है तो बाबा याद नहीं रहता है।

आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं, मन को मैंने पुरुषार्थ में लगा दिया, बुद्धि में ज्ञान की धारणा किया तो योग लगा। तो याद में रहने का नैचुरल संस्कार बन गया जो मन न चलायमान होता है, न डोलायमान होता है, अगर चलायमान हुआ तो बुद्धि में ज्ञान कम है। बुद्धि में आत्मा का, परमात्मा का, ड्रामा का अच्छा ज्ञान है तो आत्मा, परमात्मा, ड्रामा में एक्यूरेट है। जब से मैं बाबा के पास आई हूँ, योग पर बहुत अटेन्शन रखा है। कभी भी कोई काम के लिए बाबा ने मुझे बुलाया नहीं होगा, अपने आप हाज़िर हो गई होंगी। सामने आते ही जनक यह करना है, जो बाबा मतलब बहुत फायदा लिया है जो काम भाई नहीं कर सकते थे वो भी बाबा ने करवाया। अभी इस उम्र में भी मेरी मेमोरी ठीक हो तो यह बाबा की कमाल है ना! जो भुलाने वाली बात है वह याद नहीं करती, जो याद करने वाली बात है वो भूलेगी नहीं। ऐसी बातें न बिसरो और जो न याद करने की बातें हैं वो याद नहीं करो, यह है निरंतर याद। अपने को साधारण नहीं समझो, एक दो को अच्छी तरह से देखो क्योंकि हम सब अच्छी आत्मायें हैं, भगवान के बच्चे हैं। भले हमारे मंदिर बनेंगे, पर मंदिर में रहने के लिए नहीं मिलेगा, यहाँ मनुष्य से देवता बनने के लिए बैठे हो। पहले केवल 4-5 भाई थे, अभी देखो इतने सारे भी आके बैठ गये हो। जो भी है हर एक का पार्ट अपना है, परन्तु एक दो के लिए फेथ और रिगार्ड हो। जो भी बात हुई है या होती है, सेकेण्ड में बाबा भी कहता है उसे फुलस्टॉप लगा दो लेकिन मैं कहती हूँ यह भी वीकनेस है। ड्रामा अनुसार सीन चेंज हो रही है तो फुलस्टॉप क्यों दूँ! यह गहरी बात है। ड्रामा की नॉलेज में बहुत गहराई में जाने से नॉलेज देने वाला याद रहेगा। जितना भी ड्रामा की नॉलेज है उसे यूज़ करें, यह भी ड्रामा में नूँधा हुआ था। कोई प्लान नहीं था पर ड्रामा अनुसार...उसको स्वीकार करो क्योंकि यह टाइम जा रहा है इसलिए शोभता नहीं है। ड्रामा में समय का ज्ञान है तो इसमें समय को सफल करना है।

पावरफुल बन फीलिंग को फिल करो

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्नः दादी, बाबा बार-बार कहता है कि आत्मायें बहुत दुःखी हो रही हैं, बहुत दुःख बढ़ रहा है इनको मुक्ति-जीवनमुक्ति देना है, तो हम किस स्थिति में रहें जो वे दुःख से मुक्त हों, जब तक गेट खुले, क्योंकि गेट जब खुलेगा तब तो सब अपने आप मुक्त हो जायेंगे! अभी हमारी कौन-सी ऐसी स्थिति हो जो उनको दुःख की फीलिंग कम हो जाए?

उत्तरः इसके लिए हमें अपनी सम्पूर्ण स्टेज में ठहरना होगा। अब युद्ध में समय न जाये। जैसे अभी अच्छे बैठे हैं लेकिन बीच में संकल्प आ जाये यह करना है या यह हो गया, दोनों में से कोई संकल्प न आये। बस, सबको देना है, पहले खुद पावरफुल होंगे तभी तो देंगे। जैसे बाबा बैठता था तो फीलिंग आती थी ना, दे रहे हैं। जैसे जब कोई योगयुक्त होकर बैठता है तो लगता है कि बहुत पावरफुल योग कर रहा है। हर एक को पुरुषार्थ तो करना है ना। और कोई फिर ऐसे भी हैं, जिनका योग नहीं लगता, वह तो होंगे ही, लास्ट तक होंगे इसलिए उसका ज़्यादा सोचे नहीं। यह क्यों करता है, यह कब बदलेगा... अरे, पहले मैं तो बदलूँ। पहले मैं बदल जाऊँ तो दुनिया अपने आप बदलेगी।

प्रश्नः दादी, बाबा ने एक मुरली में कहा है कि आप बच्चे अगर एक मिनट पावरफुल अशरीरी बन जाओगे तो उसका असर अपने आप सारा दिन नैचुरल योग की तरफ खींचता रहेगा, वह स्टेज कैसे बने?

उत्तरः इसमें मेहनत तो है, अटेन्शन देना पड़ता है, बाकी हो जायेगा। बस, सभी पावरफुल योग में बैठें। अपने युद्ध में ही न लगे रहें। पावरफुल योग होगा तो उसका प्रभाव चारो ओर ज़रूर फैलेगा। जैसे बैठने समय योग पावरफुल हो जाता है ऐसे चलते-फिरते, काम करते भी अटेन्शन हो तो नैचुरल हो जायेगा।

प्रश्नः हम तो अपने ऊपर अटेन्शन देते हैं, बाकी हमारे चारो तरफ जो कुछ कारोबार चल रहा है यज्ञ में, क्या उसको हम सहज स्वीकार कर लें? अगर हमारे संकल्प उसके प्रति चलेंगे तो वो तो ठीक नहीं है, तो क्या उसे ठीक मानकर स्वीकार कर लें?

उत्तरः स्वीकार क्यों करें! यज्ञ के हित में हो तो स्वीकार करेंगे ना। दूसरा-यज्ञ रक्षक बाबा बैठा है, बाबा को, बड़ों को हम सुना देवें कि यह थोड़ा हो रहा है...बस, हमारी ज़िम्मेवारी इतनी ही है क्योंकि हमारे संकल्प चलाने से कुछ होगा नहीं। और ही कहेंगे यह हमारे लिए पता नहीं क्या क्या सोचते हैं, इसलिए हम योगयुक्त होकर रहें तो वायुमण्डल में ज़रूर आयेगा और वो ऑटोमेटिक फैलता जायेगा। सिर्फ अटेन्शन चाहिए, बस।

प्रश्नः दादी, समय के अनुसार अभी आगे यज्ञ के भविष्य के बारे में आपको कुछ प्रेरणायें आती हैं? क्योंकि कई बार सोचते हैं कि अभी इतनी वृद्धि हो रही है और बाबा कहता है अन्त में भक्तों की भीड़ लगेगी, व्यवस्था कठिन हो जायेगा?

उत्तरः हाँ, वह समय आयेगा तो सही लेकिन अचानक ही आयेगा, वायुमण्डल में कुछ न कुछ ऐसा होगा, जो अभी हँस रहे हैं, खा रहे हैं, मौज मस्ती कर रहे हैं, खराब काम भी कर रहे हैं वो सब ऑटोमेटिकली बन्द हो जायेगा। लेकिन उस परिवर्तन में टाइम तो लगेगा। अभी हमारा संगठन पहले पक्का हो, मेरे ऊपर किसी की कमज़ोरी का असर न हो, ऐसी अवस्था तो होनी चाहिए। कोई समय कैसा होता है, कोई दिन कैसा...सारा ग्रुप थोड़ही वैसा बना है, कोई चढ़ता है, कोई ढ़ीला होता है...दोनों ही होता है। हम अपने को देखें, बस और नैचुरल जो हमारे साथ रहते हैं, उनके ऊपर भी असर होगा। लेकिन देखो सारा टाइम पावरफुल अवस्था है? इससे दूसरों में भी पावर आ सकती है।

प्रश्नः कोई कोई पूछते हैं, हम तो कह देते दादी हमारी संगम के अंत तक रहेंगी। बाबा कहता है मैं बैठा हूँ लेकिन फिर भी लोगों को संकल्प तो आता है ना! अगर सभी दादियां ऐसे ही चली जायेंगी तो प्रत्यक्षता किसकी होगी? आप दादियों को प्रत्यक्षता तो देखनी ही चाहिए!

उत्तरः यह तो बाबा के हाथ में है। बाबा किसी न किसी में वो ताकत भरता है। बाबा को यज्ञ चलाना है, वो तो चलायेगा ही। किसी न किसी से तो करायेगा। जैसे अभी जानकी दादी तो सम्भाल रही है ना! ऐसे और कोई भी निमित्त बन सकते हैं। आप हम क्यों संकल्प चलायें, बाबा साथ है ना!

श्रेष्ठ कर्म का पैरामीटर

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जब कोई व्यक्ति इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आता है तो पहले दो-तीन दिनों में ही उसे यह बात तो स्पष्ट कर दी जाती है कि पवित्रता या निर्विकार मनोवृत्ति को धारण करना और योग का अभ्यास करना हमारे पुरुषार्थ के दो मुख्य स्तम्भ हैं।

फिर, पवित्रता की व्याख्या करते हुए हम यह स्पष्ट करते हैं कि मन को, निर्विकार एवं निर्मल बनाना या विचार, व्यवहार, व्यापार, आहार आदि को सात्विक बनाना और जीवन में ब्रह्मचर्य, सन्तुष्टता, सहृदयता, शीतलता एवं, मधुरता, अनासक्ति एवं उपरामता, साक्षी स्थिति एवं न्यारापन, तथा नम्रता एवं निस्वार्थता रूपी दिव्य गुणों को धारण करना ही पवित्रता है। योग के विषय में भी हम स्पष्ट समझाते हैं कि व्यावहारिक जीवन में आत्मा के सर्व-सम्बन्ध परमात्मा से जोड़ने, उस ज्योतिस्वरूप पिता की लगन में मग्न होना अथवा ईश्वरीय स्मृति में स्थित होना ही 'सहज राजयोग' है।

हम यह मानते हैं कि पवित्रता और योग दो मुख्य ईश्वरीय वरदान हैं जिनमें सभी वरदान समाए हुए हैं। इन वरदानों को प्राप्त करने से कुछ भी अप्राप्त नहीं रहता। ये दो वरदान हमारे पुरुषार्थ रूपी नाव के दो चप्पुओं के समान हैं जिनके द्वारा हम अपनी नाव को पार कर सकते हैं। यों भी कह सकते हैं कि ये दोनों पंख हैं जिनसे कि आत्मा रूपी पक्षी उड़ने में समर्थ हो जाता है और अपने धाम में जाने के योग्य हो जाता है। ये दोनों कैंची के दो फल की तरह भी हैं जिनसे कि हम अपने कर्मों के बंधनों को अथवा विकारों की रस्सियाँ काट कर इनसे मुक्त हो सकते हैं। इस प्रकार, 'पवित्रता' और 'योग' दोनों के इतने लाभ गिनाए जा सकते हैं और इनकी इतनी उपमायें दी जा सकती हैं कि जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इन दोनों को मिला कर किये गये पुरुषार्थ को 'श्रेष्ठ पुरुषार्थ' कहा जा सकता है।

परन्तु हम सबको यह भी मालूम है कि अपने जीवन की व्यवसायिक या पारिवारिक ज़िम्मदारियों को निभाने के लिए भी हम सबको विविध प्रकार के कर्मों में व्यस्त रहना पड़ता है। कोई कपड़े का व्यापार करता है तो कोई मोटर-पार्ट्स का, कोई दफ्तर में जाता है तो अन्य कोई केमिस्ट की दुकान करता है। अपनी आजीविका-उपार्जन के लिए किसी को भी कोई व्यवसाय करने की मना तो नहीं है परन्तु हाँ, यदि कोई कर्म, 'पवित्रता' और 'योग' रूपी हमारे पुरुषार्थ में विघ्न रूप बनते हैं तो उनके लिए ये सोचना अथवा परामर्श लेना हमारी जिम्मेदारी हो जाती है ताकि हमारा वह व्यवसाय हमें ईश्वरीय वरदान लेने से वंचित न कर दे। व्यवसाय को विघ्न के बजाय साधन बनाना अथवा अपनी योग- साधना में उसे सहयोगी बनाना ही हमारा कर्त्तव्य है। यदि वह हमारी 'पवित्रता' अथवा हमारे योगी जीवन की धारणाओं को कहीं कमजोर करते हुए मालूम होता है तो उस विघ्न को हटाने के लिए उपाय करना ज़रूरी है। हम यह नहीं कह सकते कि हमारा धन्धा ही ऐसा है, वो हमारी पवित्रता और हमारे इस पुरुषार्थ में बाधा रूप है, तो अवश्य ही हमें इसका कुछ हल निकालने की ओर ध्यान देना ही चाहिये। क्योंकि जब हमने यह समझ लिया है कि 'पवित्रता' और 'योग' ही हमारा मूल एवं मुख्यतम पुरुषार्थ हैं और कि इनकी धारणा से ही हमें सर्व प्राप्तियाँ होती हैं तो निश्चय ही हम इन्हें तो किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते, बल्कि इनमें वृद्धि करते हुए हमें अपने मार्ग की बाधाओं को ही मिटाने का यत्न करना है।

जब हमने यह समझ लिया है कि 'पवित्रता' और 'योग' ही हमारा मूल एवं मुख्यतम पुरुषार्थ है और इनकी धारणा से ही हमें सर्व प्राप्तियाँ होती हैं तो निश्चय ही हम इन्हें तो किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते, बल्कि इनमें वृद्धि करते हुए हमें अपने मार्ग की बाधाओं को ही मिटाने का यत्न करना है।

इस प्रकार, 'पवित्रता' और 'योग' हमारी धारणाओं के मापदण्ड हैं और हमें क्या करना है तथा क्या नहीं करना - इस प्रश्न के उत्तर के लिये ये निर्णय की कसौटी भी है। चाहे कोई उनसे मुक्त हो, अवकाश प्राप्त हो अथवा प्रभु-समर्पित जीवन व्यतीत करता हो, उसे पवित्रता और योग रूपी पुरुषार्थ में तो नित्य प्रति आगे बढ़ना ही है। अपने घर की परिस्थितियों को अपने पुरुषार्थ के लिये रुकावट मानना या समर्पित जीवन की किसी कठिनाई को कारण मानना तो एक प्रकार से अपने पुरुषार्थ के ढीलेपन के औचित्य को सिद्ध करने की कोशिश करना है। यह तो गोया स्वयं को स्वयं हानि पहुँचाना अथवा परमात्मा से मिलने वाले अनमोल वरदानों से वंचित रखना है। यह ईश्वरानुभूति नहीं है बल्कि परिस्थिति अनुभूति है जो कि हरेक व्यक्ति को सामान्यत: होती ही है। इसमें कोई विशेषता अथवा महानता नहीं है और सच तो यह है कि यह 'पुरुषार्थ' की परिभाषा में शामिल ही नहीं है।

जो कमज़ोर और दिलशिकस्त होते हैं वे ही परिस्थितियों और रुकावटों का वर्णन किया करते हैं और इस वर्णन के साथ-साथ उन्हें अपनी असफलताओं का कारण बताते हुए वे परिस्थितियों को दोषी बताते हैं। इसके विपरीत, जो महावीर होते हैं वे परिस्थितियों से जूझकर उनको पार करते हैं। उनका वर्णन सदा सफलता के प्रसंग में किया जाता है। अत: यदि कोई माता कहती है कि उसका पति पवित्रता और दिव्य गुणों की धारणा में नहीं चलता या कोई पति कहता है कि उसकी पत्नी पवित्रता एवं योग की इच्छुक नहीं है, या कोई युवक यह बताता कि उसके घर के दूसरे सदस्य उसकी बातों पर खिल्ली उड़ाते हैं और सहयोगी न बनकर उसके मार्ग में रुकावट डालते हैं तो उन्हें सोचना यह चाहिये कि हम पवित्रता और योग रूपी वरदान को तो किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकते, अत: रुकावट रूपी कारणों का वर्णन करने के बजाय हम अपने घर के दूसरे सदस्यों को सहयोगी कैसे बनायें, या जब वे सहयोगी नहीं बनते तो हम उन द्वारा उपस्थित बाधाओं को पार कैसे करें? ईश्वरीय निश्चय की यही निशानी है, चिन्तनशील व्यक्ति का यही चिह्न है, सच्चे पुरुषार्थी का यही पुरुषार्थ है। रुकना उसका काम नहीं है, आगे बढ़ना ही उसका काम है।

यदि सेवा कार्य में लगा हुआ कोई गृहस्थी या समर्पित व्यक्ति, सेवा के कारण किसी संघर्ष में पड़ जाने से अपनी पवित्रता और योग की स्थिति को महान बनाने में बाधा महसूस करता है तो उसे भी चाहिए कि वह पहले अपनी स्थिति को पवित्रता एवं योग से ठीक बनाए क्योंकि श्रेष्ठ स्थिति से ही दूसरे की श्रेष्ठ सेवा भी हो सकती है। यह एक नियम है कि मनुष्य की जैसी स्थिति होती है वैसी ही उसकी कृति भी होती है अथवा जैसा रचयिता होता है वैसी ही उसकी रचना भी होती है। सेवा भी हमारी पवित्रता और योग की स्थिति को महान बनाने का एक साधन है। यदि हम उसे साधन के रूप में नहीं अपना सकते तो अवश्य ही हमारी ओर से ही उसमें कोई त्रुटि आई है जिसे निकालना ही हमारे लिए हितकर है।

बदलना है आचार -- पेज 12 का शेष

सुबह-सुबह आपको अपने दिन की शुरुआत अच्छे विचारों से करनी चाहिए। ब्र.कु. अनुज ने बताया की हम जो देखते, सुनते व करते उससे हमारा भाग्य बनता है । हमें अपनी सोच की क्वालिटी पर ध्यान देना चाहिए। यह उन्होंने रमणीक ढंग से बताया। साथ ही साथ ज्ञानवीणा के संपादक ब्र.कु.श्रीप्रकाश ने भी कहा की दुनिया में स्थूल चीज़ों से सुख और शान्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसके लिए हमें अध्यात्म की तरफ मुख मोड़ना चाहिए। रीवा सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. निर्मला द्वारा आत्मा तथा परमात्मा का परिचय देकर उन्हें सहज राजयोग का अभ्यास कराया गया। परमात्मा हमारा पिता है यह सम्बध जोड़कर कार्य करना चाहिए। हमें संसार को देना है न की लेने की भावना रखनी है। सतना सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. शीला द्वारा आये प्रमुख अतिथियों को आशीर्वचन तथा पुन: आगमन का निमंत्रण दिया गया।

भरतपुर। राजस्थान की प्रमुख सांस्कृतिक एवं समाजसेवी संस्था ''लोक परिषद् भरतपुर'' द्वारा ओयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं पूर्व डेयरी मंत्री चौ. हरि सिंह, पूर्व विधायक सुरेश कुमार शर्मा, डॉ. सत्येन्द्र चतुर्वेदी, अमरसिंह, रमेशचंद्र पराशर, ब्र.कु.कविता व श्रीनाथ शर्मा।

सासाराम। सांसद एम. आर. चाडी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता तथा अन्य।

अकोला-महा.। विधायक हरिदास भदे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अर्चना।

कौशाम्बी। जिला कारागार में आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.कमल, ब्र.कु.संगीता, ब्र.कु.भगवान, जेलर अरोरा एवं कारागार अधीक्षक लक्ष्मीनारायण दोहरे।

मनचेश्वर-भुवनेश्वर। विधायक प्रियदर्शी मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मंजु। साथ हैं महिला दक्षता समिति की अध्यक्षा उषा मोहन्ती।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी। शिक्षक दिवस पर आयोजित परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु.विमला। साथ हैं प्राचार्य शोभा सिंह, ममता शर्मा तथा अन्य।

मण्डी-हि.प्र.। एस.पी.मोहित चावला को ईश्वरीय प्रसाद व प्योरिटी पेपर भेंट करते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.दीपा व ब्र.कु.दक्षा।

भवानीपटना-ओडिशा। न्यायाधीश पी.के.जेना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शशि।

नौगॉव। शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय में रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में प्राचार्य बी.जी.अहिरवार, समस्त टीचर्स, ब्र.कु.नन्दा व ब्र.कु. रितु।

भुवनेश्वर-फॉरेस्ट पार्क। संस्कृति भारती द्वारा आयोजित ''विश्व ऑडियो समाज सम्मेलन'' में उपस्थित लेखिका कानन बाला पटनायक, ब्र.कु.गीता, स्वाधीनता संग्रामी गुरुकल्याण महापात्र, रामकृष्ण मिशन के स्वामी वैराग्यानंद जी, श्री गोविंद प्रधान, कार्यक्रम के आयोजक श्रीकांत नायक जी तथा सीतावल्लभ जी।

करनाल सैक्टर 7। ''इन्टीग्रेटिंग वैल्यूज़ इन सोशल लाईफ'' विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेन्स का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए एस.पी.चौहान, डॉ.डी रंजन शर्मा, ब्र.कु.राधा, ब्र.कु.प्रेम तथा अन्य।

धमनोद-म.प्र.। दादी प्रकाशमणि के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम 'विश्व बन्धुत्व समारोह' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सांसद सावित्री ठाकुर, ब्र.कु.छाया, ब्र.कु. प्रकाश, ब्र.कु. प्रीति व उद्योगपति प्रेमजी अग्रवाल।

अखाद्य वस्तुएं और उनका शरीर पर प्रभाव

अपनी माँ का दूध अमृत .....दूसरे की माँ का दूध रोग कारक

6. यह वैज्ञानिक सत्य है कि हर माँ का दूध उसके बच्चे के लिए अमृत है परन्तु हमारे लिए तो सिर्फ रोग कारक है। दूसरे की माँ का दूध पीकर तो जुकाम, खाँसी, दमा, हृदय, गुर्दे, प्रोस्टेट, मोतिया, गठिया, पाचन व आँखों की बीमारियों से कभी नहीं बचा जा सकता।

7. सामान्य स्थिति में दूध और उससे बनने वाले पदार्थ- दही, छाछ, घी, पनीर, चाय और मिठाइयाँ इनमें से कोई स्वास्थ्य वर्धक नहीं है। इनके सेवन से शरीर की हालत एक धूल और कीचड़ से अकड़ी-जकड़ी मोटर कार के समान बन जाती है जो घर्षण और ताप पैदा करती है। चलती कम लेकिन पेट्रोल ज़्यादा खाती है। फलत: ऐसे में किसी का सिर और गर्दन मोटी, पेट निकला हुआ, छाती धँसी हुई, पैर पतले तो जांघें मोटी और बेडौल हो जाती हैं। किसी के हाथों, पैरों, जोड़ों में दर्द होने लगता है। बवासीर-मस्से, भगन्दर, नासूर, हर्निया, माइग्रेन, टॉन्सिल, अपेन्डिसाइटिस, ब्लड-प्रेशर, बुखार, स्वप्नदोष, प्रदर आदि एक या अनेक रोग मनुष्य के पीछे लगे रहते हैं। जब कब्ज हो जाती है, तो कब्ज की गैस दिमाग के ऊपरी भाग पर दबाव डालती है, गैस का स्वभाव है ऊपर जमा होना। यह गैस सिरदर्द, चक्कर आना और बुद्धि मन्दता पैदा करती है।

8. बचपन के बाद दूध का उपयोग जारी रहने पर दूध के शीघ्र विकसित होने वाले हार्मोन्स हमारी ग्रन्थियों को उत्तेजित कर असन्तुलित और विकृत कर देते हैं। हमारा शारीरिक विकास रुक जाने के बाद ये ही हार्मोन्स असाधारण कोषाणुओं की वृद्धि के लिये प्रेरणा बन जाते हैं। कैंसर रोग में दूध का उपयोग, कैंसर की तीव्र वृद्धि में मदद करता है। कैंसर रोग में दूध पीकर रोगी अपनी मृत्यु को शीघ्र बुला लेता है।

9. दूध का अधिक प्रोटीन हमारे पेन्क्रीयास, पाचन-ग्रन्थि तथा गुर्दे को क्षीण कर देता है। दूध का उच्च प्रोटीन अपने पाचन के लिए हड्डियों में से कैल्शियम खींचकर डांड नामक हड्डी की बीमारी (जिसमें हड्डियाँ शीघ्र टूट जाती हैं और जल्दी नहीं जुड़ती) पैदा करता है। दूध का उच्च कैल्शियम पथरी और जोड़ों के आसपास इकट्ठे होकर संधिवात जैसे रोगों को पैदा करता है।

10. माँस, अण्डे, दूध, दालों का प्रोटीन शरीर के लिये अम्लकारक और विषाक्त प्रोटीन है। प्रकृति ने हमारे लिए विष रहित प्रोटीन फलों, सब्जियों, गिरियों में सुपाच्य रूप में रच दिया है। नारियल, अखरोट, बादाम, मूँगफली जैसी गिरियाँ प्रोटीन और वसायुक्त हैं।

गुन्दूर की शोभारानी को ब्लिडिंग की समस्या थी वह स्वर्णिम आहार पद्धति से ठीक हो गई। तो आइये, स्वर्णिम आहार पद्धति को अपनाकर इन गोली-दवाई-इंजेक्शन-बीमारी-अस्पताल-डॉक्टर-इलाज से मुक्ति पायें और सदा स्वस्थ जीवन का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करें।

M - 07791846188
healthywealthyhappyclub@gmail.com
संपर्क करें केवल 1pm से 3pm के बीच में

सदा स्वस्थ जीवन

स्वर्णिम आहार से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की ओर

-ब्र.कु.ललित शांतिवन

आध्यात्मिकता हमें सुखी होना सिखाती है ना कि नियंत्रण करना

प्रश्न: इतना जो भरा हुआ है पहले से, चाहे वो गुस्सा है मतलब कि ठीक है अब तो मुझे आगे चेक करना है। आगे के लिए तो मुझे समझ में आ गया कि मैं ना लोगों को बदल सकती हूँ, न परिस्थिति को लेकिन स्वयं को बदल सकती हूँ?

उत्तर: लेकिन पता है, हम क्या महसूस नहीं करते? जैसे हमने कहा कि स्थिरता पहले से मौजूद है। आप अभी अनुभव करो कि आप बिल्कुल शांत हैं, मन बिल्कुल शांत है। अब बीती हुई घटना की कोई भी सीन लो और फिर उस पर चर्चा करना शुरू करो। तो क्या होगा?

प्रश्न: अगर वह चर्चा डिटैच वाला हो तो?

उत्तर: तब भी। अब हमें ये याद नहीं रहता है और हम अपनी ही खुशी को, अपनी ही स्थिरता को हम खुद खत्म करते हैं और दिन के समाप्त होने पर हम पूरी तरह से खाली हो चुके होते हैं। अगर हम अपने बिलीफ सिस्टम को चेक करें कि अतीत के बारे में सोचना, बीती हुई घटना के बारे में चर्चा करना, वर्णन करना, यह सब अपनी शक्ति को नष्ट करना है। अब हमें इसके प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता है। शायद हमें इसकी अवेयरनेस नहीं है कि इससे मेरा कितना नुकसान हो जाता है। हम उसको बहुत ध्यान से करते जाते हैं। पास्ट में मान लो किसी ने मुझसे गलत व्यवहार किया। अब मैं दिन में चार लोगों को फोन करती हूँ, वो डिस्कस करती हूँ , वो शेयर करती हूँ, जितनी बार मैं चर्चा करती हूँ कि उनको ऐसा नहीं करना चाहिए था, उनको मेरे अनुसार करना चाहिए था। कई बार हम कहते हैं कि इससे मुझे सीखने को मिलता है। इससे हमें क्या सीखने को मिलता है? सीखने को ज़रूर मिलता है जब हम उसे सही नज़रिये से लेते हैं। अगर मेरे साथ कोई परिस्थिति हुई जिससे उस मोमेन्ट में, चाहे वो कल था या दस साल पहले था मैंने उस घटना को बहुत दर्द के साथ अनुभव किया था या ऐसा बहुत कुछ हो गया था। अगर आज भी मैं उस बात को कहती हूँ, तो इसका मतलब है कि मैंने उस बात को याद रखा है, उन लोगों को याद रखा है, उन लोगों ने जो एक-एक बातें कही वो सब मैंने याद रखी है। अब इससे मुझे क्या सीखने को मिला?

ब्र.कु. शिवानी

इससे हमें सीखने को यही मिला कि अगली बार जब वो लोग मिलेंगे तो मुझे उनसे सतर्क रहना होगा। ये कोई शिक्षा नहीं हुई। ये मैंने वास्तव में किसके बारे में सीखने की कोशिश की, पास्ट में जो दर्द का अनुभव हुआ था मैंने सिर्फ उसे ही क्रियेट किया और अपने वर्तमान को नष्ट किया, साथ ही साथ अपने भविष्य की संभावनाओं को भी समाप्त कर दिया।

प्रश्न: कई बार हम क्या कहते हैं कि मुझे पता है कि वह कभी भी आकर बात को उलझा देते हैं। आप जानते हैं, इसमें भी भिन्न क्रिया काम करती है। कोई ऐसा व्यक्ति है जो उनके साथ जब मैं होती हूँ, वहाँ पुन: वैसा व्यक्तित्व दिखता है और मेरा व्यक्तित्व ही सब कुछ हो जाता है।

उत्तर: सब कुछ नहीं, यह पूरी तरह अलग बात है। अगर हम ये प्रोसेस ले रहे हैं वो मुझे उलझा देते हैं, इससे मैंने कुछ नहीं सीखा। इससे मैं उन्हीं के बारे में चिंतन कर रही हूँ, जो कि समय की बर्बादी है। यह भी महत्वपूर्ण नहीं है कि मुझे क्या जवाब देना है। मौसम बदल रहा है तो मुझे मौसम के बारे में चिंतन नहीं करना है बल्कि मुझे अपनी सुरक्षा करनी है। राजयोग का अर्थ ही है अपने ऊपर ध्यान केंद्रित करना। अगर मैं औरों के बारे में, औरों के व्यवहार के बारे में सोचती रहूँ, तब क्या मैं उससे बच पाऊंगी? नहीं। जब तक मैं अपने आपको नहीं समझती हूँ कि मुझे कैसे जवाब देना है। क्योंकि वो तो मेरे कंट्रोल में है ही नहीं। एक ही है जो मेरे कंट्रोल में है और वह है स्वयं को समझना।

वो क्या कर सकते हैं, क्या नहीं कर सकते हैं इस पर हमें ध्यान नहीं देना है। मुझे कैसे रेस्पॉन्ड करना है, मुझे अपनी सुरक्षा कैसे करनी है इस पर ध्यान रखना है कि मैं इन सब चीजों से दु:खी न हो जाऊँ। वो ठीक से अगली बार मुझसे बात करें। ये तो मेरे कंट्रोल में नहीं है। लेकिन अगली बार मैं दु:खी न हो जाऊँ, ये मेरे कंट्रोल में है। अब आज के दिन मेरे लिए क्या सीखने की बात हो सकती है कि ये तो ठीक से बात ही नहीं करते हैं, इनसे मुझे बहुत संभलकर चलना है। तो हम उनके बारे में सोच रहे हैं कि इनसे ज़्यादा बात नहीं करनी है। ये कहीं भी ऐसा कुछ कह देते हैं जिसके कारण मैं दु:खी हो जाती हूँ।

आध्यात्मिकता इसे 'पॉज़ीटिव' ढंग से लेना सिखाती है कि कल मैं दु:खी हुई थी, आज मुझे ये ध्यान रखना है कि मुझे दु:खी नहीं होना है। हमें अपने-आप पर ध्यान रखना है। अभी बहुत सारी बातें आने वाली हैं। अगर आप उनको कंट्रोल करने की कोशिश करोगे तो आप हार जाओगे। अच्छा कल आपने ठीक से बात नहीं की आज आपने ठीक से बात कर ली, लेकिन आज कोई और ठीक से बात नहीं करता तो आप कितने लोगों को कंट्रोल करेंगे, कितने लोगों को समझायेंगे कि बात करने का ये सही तरीका है।

- क्रमश:

उठो...सम्पूर्णता तुम्हारा आह्वान कर रही है..।

-ब्र.कु.सूर्य, माउण्ट आबू

योगी योग के आनंद में खो गया। अन्तर्ध्यान अवस्था में उसने एक दृश्य देखा। उसके सम्मुख एक तरफ फरिश्ता हाथ में माला लिए खड़ा है और अपनी मधुर मुस्कान से इशारा कर रहा है, आओ, मेरे समीप आओ..... यह माला तुम्हारे लिए ही है....।

मैं तुम्हारा ही स्वरूप हूँ, जल्दी आओ, मैं तुमसे मिलकर एक होना चाहता हूँ..... मैं ही तुम्हारी मंज़िल हूँ। बस कदम बढ़ाओ.... ओ योगी, रुके क्यों हो? क्या तुम्हें समय का इंतज़ार है? नहीं-नहीं, यह भूल न करना, ज्यों ही तुम मेरे पास आओगे, समय स्वत: ही समाप्ति की घंटी बजा देगा।

अचानक ही जब उसने दूसरी ओर देखा तो पाया कि एक देवता हाथ में ताज लिए उसकी ओर इशारा कर रहा है। आवाज आ रही थी, आओ तुम्हें यह ताज पहना दूँ। योगी पहचान न सका कि वह कौनसा देवता है।

देवता मुस्कुराया, उसके मुख से मानो फूल झरने लगे। वातावरण खिल उठा। उसने आकर्षक वाणी में कहा - ओ योगी, मैं तुम्हारा ही भविष्य स्वरूप हूँ, मैं तुम्हारा कब से इंतज़ार कर रहा हूँ, आओ.... इस ताज को स्वीकार करो। तुम्हें ये ताज पहनाकर, मैं तुममें समा जाना चाहता हूँ.....।

योगी के लिए नितांत मनमोहक दृश्य था यह। छवि देखते ही बनती थी। योगी इसे देखने में ही मग्न रहना चाहता था कि - अचानक उसका ध्यान भंग हुआ। चलो.... ऐसा सुन्दर समय फिर कभी नहीं आयेगा। चलो, वरण करो अपने अंतिम स्वरूप का। अब मुझे और इंतज़ार न कराओ - फरिश्ते की मधुरवाणी सुनाई दी।

योगी के कदम आगे बढ़े.... परन्तु चार कदम चलकर वह रुक गया। उसे लगा बहुत दूर है फरिश्ता....।

फरिश्ता हंसने लगा - क्यों योगी, यह क्या? मैंने सोचा अब तुम गति पकड़ोगे, यह क्या किया? कहा फरिश्ते ने।

योगी बोला- फरिश्ते, तुम मुझे अत्यंत प्रिय हो। मैं पल भर में तुम्हारे पास आ जाना चाहता हूँ, परन्तु, मैं विवश हूँ।

फरिश्ते ने मानो मजाक किया - विवश? योगियों के ये बोल? सर्वशक्तिवान् के बच्चे और ये बोल।

मुझे शर्मिंदा न करो। तुम तो बंधनमुक्त हो, परन्तु मेरे कई बंधन मुझे आगे नहीं बढ़ने देते। मैं आगे बढ़ता हूँ वे फिर मुझे पीछे खींच लेते हैं। मोह के बंधन बड़े कड़े हैं, मैंने जो कुछ भी आज तक संग्रह किया है, वो सब मेरे लिए बंधन बन गया है - बोलो मैं क्या करूं - योगी ने कारण बताया।

फरिश्ता बोला - योगी जन्म-जन्म तुम बंधनों में जकड़े रहे हो, अब तुम इन बंधनों को पल भर में क्यों नहीं तोड़ देते हो? तुम देख चुके कि इन बंधनों में दु:ख ही दु:ख है। तुम दु:ख को स्वीकार भी कर रहे हो, परन्तु बंधनों को तोड़ना भी नहीं चाहते। नहीं फरिश्ते, ऐसी बात नहीं है, मैं तो इन्हें तोड़ना चाहता हूँ परंतु इन्होंने मुझे मजबूती से पकड़ लिया है, मैं चाहते हुए भी छूट नहीं पाता हूँ - योगी ने छूटना चाहा।

फरिश्ता पुन: मुस्काया - मैं तुम्हारे अन्तर्मन के भावों को भी जानता हूँ। योगी, बंधनों ने तुमको नहीं पकड़ा है, तुमने उन्हें पकड़ा है। तुम चाहो तो छूट सकते हो। जल्दी करो। यदि मेरा वरण करना चाहते हो तो एक झटके-से बंधनों की रस्सियाँ तोड़ दो। परंतु कैसे तोड़ दूं? योगी ने पुन: प्रश्नवाचक आवाज में कहा, जबकि भगवान् स्वयं बोझ हरने आया है, तो तुम उसे देते क्यों नहीं? क्यों तुम, तेरे-मेरे के जाल बुनकर उसमें फंस गये हो? याद रखो, हे योगी, यदि तुमने ये जाल न तोड़ा तो समय जबरदस्ती तुमसे ये जाल तुड़वायेगा। और पता है, तब क्या होगा? तुम्हें असहनीय कष्ट होगा और तब यह माला तुम्हारे गले की नहीं किसी और के गले की शोभा बनेगी, इसलिए मानो मेरा कहना अन्यथा तुम बहुत पछताओगे। समय ललकार रहा है, तोड़ो बंधन एक संकल्प से आओ, मैं तुम्हारा स्वागत करने को उत्सुक हूँ। फरिश्ते ने पुन: दोहराया।

योगी कुछ क्षणों के लिए मग्न हो जाता है, ठीक कहता है फरिश्ता। बंधन है तो कुछ भी नहीं। यों ही मन के बंधन बांध लिये हैं। मैं इन्हें साहस से तोड़ दूंगा।

योगी फिर आगे बढ़ता है। चार कदम चलकर फिर रुक जाता है। क्यों रुक गये योगी? फरिश्ते ने संकेत किया। मैं पुन: मजबूर हो गया। बंधन तोड़े तो अहम् ने प्रवेश कर लिया, अलबेलापन, ईर्ष्या व सूक्ष्म कामनाओं ने मुझे चारों ओर से घेर लिया। मेरे कदम रुक गये - योगी ने उत्तर दिया। फरिश्ता बोला, वाह योगी, बड़े-बड़े शत्रुओं को जीत लिया, छोटों से घबराते हो। योगी ने स्वीकार किया, हाँ है तो छोटे ही, परन्तु इतने सूक्ष्म कि पता भी नहीं चल पाता, कब ये आक्रमण करते हैं। अचानक के वार को मैं झेल नहीं पाता। फरिश्ते ने समझाया - योगी, नम्रता का कवच सदा के लिए धारण कर लो, ज़िम्मेदारी की स्मृति का टोप पहन लो, फिर चाहे कभी भी आक्रमण हो, विजय तुम्हारी ही होगी। मनन के द्वारा अपने मन में शुभ-भावनाओं का बल भरो और आगे बढ़ो, अब समय न गंवाओ, तुम आगे बढ़ो, शत्रु स्वयं ही पीछे हट जायेंगे।

मैं सम्पूर्ण पुरुषार्थ करता हूँ। योगी पुन: आगे बढ़ता है परन्तु दो कदम चलकर फिर रुक जाता है। फिर वही रुकने की आदत - फरिश्ते ने टोका। योगी बोला - योग में एकाग्रता नहीं होती। इसलिए कदम रुक रहे हैं।

एकाग्रता - वाह, जबकि एक ही तुम्हारा है तो मन कहां भागता है, सब द्वार बंद कर लो। जरूर कुछ इच्छाएं हैं। इच्छाओं के द्वार से मन बाहर आकर्षित हो रहा है। एक बाप से ही सब-कुछ लेना है, वही मेरा संसार है - यह दृढ़ता धारण करके आगे बढ़ो। ओ योगी, अब रुको नहीं। तुम रुकते हो तो समय रुकता है। तुम रुकते हो तो अनेक आत्माएं रुकती हैं, ज़रा देखो तुम्हारे पीछे कितना बड़ा झुण्ड है! तुम विश्व के आधार हो, रुको नहीं, चलते रहो, रुकना मृत्यु है, चलना ही जीवन है, बढ़ते रहो, हिम्मत न हारो, विजय तुम्हारी ही है, साहस से कदम बढ़ाओ, मेरे पास आकर ही तुम बाप को प्रत्यक्ष कर सकोगे - फरिश्ते ने साहस दिलाया।

इस प्रकार योगी में उमंग, उत्साह आया, उसके मन का बोझ हट गया और उसने तीव्र गति से आगे बढ़ना आरंभ किया।

फरिश्ता बोला - शाबाश, परंतु तुम्हारे विचार अभी भी हद के हैं, महान् व सूक्ष्म नहीं हुए, तुम्हारे बोल अभी भी स्थूल हैं, इन्हें रॉयल व स्वमान युक्त करो, अन्यथा यह माला तुम्हारे गले में पड़ते ही मुरझा जायेगी। इसलिए सूक्ष्म होकर ही मेरा वरण करो। ऐसा कहकर फरिश्ता लोप हो गया। तब योगी का ध्यान देवता की ओर गया जो उत्सुकता से उसकी राह देख रहा था।

वह बोला - मुझे न भूलो योगी, लो ये ताज पहनो। आओ, मेरी ओर भी आओ, देखो, विश्व का राज्य-भाग्य तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। यह भाग्य केवल एक बार ही प्राप्त होता है। शिवबाबा ने मुझे, तुम्हें ये ताज पहनाने के लिए भेजा है। आओ.... बड़ा आकर्षण था इधर, येगी तीव्रता से उसकी ओर बढ़ा, परन्तु उसे लगा कि मैं साधारण मनुष्य, कैसे जाऊँ देवता के पास। देवता बोला - क्यों, मंज़िल दूर क्यों दिखाई देने लगी, मैं तो तुम्हारे बिल्कुल ही समीप हूँ। आओ....

हे देव, मेरे ये पुराने संस्कार, मुझे तुम दिव्य शरीरधारी के पास आने में हिचकिचाहट पैदा करते हैं। मुझे अभी तक आवेश भी आता है, मेरी दृष्टि वृत्ति शभी मुझे धोखा देती है। मैं क्या करूं? योगी ने-- शेष पेज 7 पर...

मलेशिया। '7 बिलियन एक्टस ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. शशि,माउण्ट आबू ,ब्र.कु मीरा तथा अन्य भाई बहनें।

केशोद-गुज.। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रो. भूपेन्द्र जोषी। साथ हैं प्रो. गजेरा साहब, हरदेव सिंह रायजादा,चीफ,गुजरात न्यूज चैनल, ब्र.कु. रामप्रकाश,न्यू यॉर्क तथा ब्र.कु. रूपा।

कोटा। कोटा ओपेन यूनिवर्सिटी में वृक्षारोपण करते हुए डॉ. विनय पाठक,वाइस चांसलर,कोटा ओपेन यूनिवर्सिटी, ब्र.कु. मृत्युंजय,वाइय चेयरपर्सन,एज्युकेशन विंग, ब्रह्माकुमारीज़ ।

सीपत। विश्वकर्मा जयंती पर्व पर अपोलो हॉस्पिटल में देवियों की चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् समूह चित्र में अपोलो हॉस्पिटल के सी.ई.ओ. डॉ. ए.के. अग्रवाल, ब्र.कु. राजकुमारी तथा अन्य।

आंवला-बरेली। इफ्को कंपनी के जी.एम. ए.के महेश्वरी को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रजनी।

वाँदा-उ.प्र.। जिला करागार अधीक्षक सन्तोष कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.गीता। साथ हैं ब्र.कु. शालिनी तथा अन्य।

दस विकारों को हरा, मनाओ दशहरा

शाहुवाडी-मलकापुर। विधायक बी.डी.ओ.उदय पवार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.वंदना। साथ हैं ब्र.कु.वर्षा।

गिदडवाडा-पंजाब। एस.डी.एम.मनदीप कौर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.रजनी।

आणंद-सरदारबाग। कृषि विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. एन.सी. पटेल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.वैशाली।

व्यावरा-म.प्र.। साध्वी अनुराधा नागर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रुक्मणि। साथ हैं टेलीफोन अधिकारी जगदीश गुप्ता तथा अन्य।

भुवनेश्वर। सास्वत मिश्रा,आइ.ए.एस.,सी.एम.डी., ओ.एम.सी. को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिजय। साथ हैं ब्र.कु. बिनी तथा अन्य ब्र.कु. बहने व भाई।

इन्दौर-राजगढ़। 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका सी.एम.ओ. रवि प्रकाश नायक, ज्योतिषी जय कृष्ण त्रिपाठी, ब्र.कु.मधु तथा ब्र.कु.नीलम।

पौराणिक कथाओं में उल्लेख है कि जब असुरों के अनाचार और अत्याचार से धरा प्रकम्पित हो उठी थी तभी शक्ति स्वरूपणी दुर्गा ने उनका विनाश किया और देवत्व की स्थापना की। कहा जाता है कि उसी काल में देव-विजयी रावण पर राम ने विजय प्राप्त की। अब एक संकल्प चलता है कि राम और रावण के युद्ध को इतनी वरियता क्यों दी जाती है? क्या ये युद्ध वाकई हुआ था या क्या ये कल्पना मात्र है? इसके लिए संत तुलसी दास कृत रामचरितमानस में कुछ आध्यात्मिक बातें ऐसी हैं जिससे सिद्ध होता है कि ये एक मानसिक ऊपज है। जब राम रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए जाते हैं तो उन्हें साक्षात्कार होता है कि रावण को मारने के लिए आध्यात्मिक रथ की आवश्यकता होगी। उस आध्यात्मिक रथ के बारे में कुछ इस तरह बताया गया है कि जैसे,

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।

बल विवेक दम पर हित धोरे। क्षमा कृपा समता रजु जोरे।।

कवच अभेद विप्र गुरु पूजा। एही सम विजय उपाय न दूजा।।

उपरोक्त चौपाइयों में क्षमा, दया, संतोष, समता, विवेक, कवच के रूप में गुरु की पूजा आदि का वर्णन है जो कि सूक्ष्म हैं न कि स्थूल। अत: तुलसीदास का कहना था कि रावण आंतरिक विकार का प्रतीक है और उसके लिए भी उन्होंने कुछ दोहे लिखे हैं जिसका अभिप्राय है, मोह रावण है, अहंकार रूपी उसका भाई कुम्भकरण है और सुख-शांति नष्ट करने वाला कामरूपी मेघनाद है।

मोह दश मौलि तद् भ्रात अहंकार, पाकारि जित कात विश्राम हारी।

एक बात जो प्राय: कही और मानी जाती है कि रावण कोई दस सिर वाला व्यक्ति रहा होगा। लेकिन आज का मेडिकल साइंस इस बात को नहीं मानता। वो कहेगा कि दस सिर वाला कोई मनुष्य हो ही नहीं सकता। क्योंकि मनुष्य के शरीर के सभी भाग जिस प्रकार मस्तिष्क से जुड़े हुए हैं और जिस जिस कार्य को वे करते हैं उसको जानने वाला कोई भी व्यक्ति इस बात को नहीं मानेगा कि मानव तनधारी के दस सिर हो सकते हैं। इसके अलावा लंका देश के रहवासी का कहना है कि रावण नाम का राजा उनके यहाँ कोई हुआ ही नहीं। इसके अतिरिक्त 'रावण' और 'राम' दोनों नाम एक-दूसरे के विपरीत अर्थ रखते हैं। रावण का अर्थ है रुलाने वाला और राम का अर्थ है लुभाने वाला। इन्हीं तथ्यों को लेकर हम आगे बढ़ें तो सीता की उत्पत्ति खेत में दबे घड़े से मानी जाती है। लेकिन आज वंश की उत्पत्ति की क्रिया को लोग विवेक से देखते हैं और इसको वैज्ञानिकता के साथ जोड़ते हैं कि ऐसा हो नहीं सकता।

अगर लोगों की मान्यता को ही ले लें तो कहीं कहीं उवाच सुनने में आता है,

एक राम दशरथ का बेटा। एक राम घट-घट में लेटा।।

एक राम इस जग से न्यारा। वही राम है सबका प्यारा।।

आत्मा को भी राम के साथ जोड़ा जाता है और घट का अर्थ है शरीर। तो शरीर को

कहा जाता है कि साधारणत: बुत जीवित दुश्मन का ही जलाया जाता है। कभी लोग किसी विरोधी का या अन्य किसी जो उनके पक्ष में नहीं हैं उनका पुतला जलाते हैं। परंतु मरे हुए शत्रु का पुतला कभी नहीं जलाया जाता। वैसे ही रावण रूपी दस सिर वाले मनुष्य को एक अलंकारिक रूप से दर्शाया गया है। जिसमें दस विकारों को दस सिर के रूप में दिखाया गया है। उसी का पुतला जलाकर आज लोग इस बात को और साक्ष्य दे रहें हैं कि अभी भी रावण ज़िन्दा है। तो क्यों ना हम इसे समझें और समझकर विकारों रूपी रावण को जलाकर सच्ची विजयदशमी मनायें।

चलाने वाली शक्ति ही आत्मा राम है। वैसे ही इस जग से न्यारे परमात्मा को भी राम के साथ जोड़ा जाता है जो इस जगत के रचयिता हैं। दशरथ के बेटे राम की बात नहीं है यहाँ। यहाँ राम परमात्मा के रूप में हैं। कहा भी जाता है कि त्रेतायुगी श्रीराजा राम के राज्य में दैहिक दैविक और भौतिक ताप तो थे ही नहीं। तो इसका अर्थ हुआ कि वहाँ सभी सुखी थे, तो वहाँ रावण जैसे राक्षस की कल्पना कैसे की जा सकती है, और सीता जैसी देवी को कोई बुरी दृष्टि से देख सकता है?

इसी दृष्टिकोण से सारी कथा पर विचार किया जाये तो यह सारा संसार विषय सागर से घिरा होने के कारण आज दु:खी है। वैसे भी पूरा विश्व एक विशाल टापू, द्वीप या महाद्वीप है जो चारो तरफ पानी से घिरा हुआ है। प्रथमत: ये विश्व स्वर्णिम युग का था, धन-धान्य सम्पन्न था जिसे सोने की लंका कहा जाता था। जब नर नारी में मौलिक और नैतिक रूप से पतन हुआ तो धर्म-ग्लानि शुरु हो गई। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वश जब सभी नर नारी हुए तो इसी भाव को स्पष्ट करने के लिए रूपक अलंकार के रूप में दस सिर वाले रावण को दिखाया गया। चूंकि ये विकार दु:खी करने वाले या रुलाने वाले (रावण) हैं। कहा जाता है कि मनुष्य का मुख मन का दर्पण है और आज मनुष्य के चेहरे पर वो रावण पूरी तरह से दिखाई देता है।

जब मन को हर्षित करने वाले गुण लोप हो जाते हैं तो हर आत्मा रूपी सीता परमात्मा रूपी राम को पुकारती है, उसी को सीता द्वारा मर्यादा अथवा लक्ष्य की रेखा का अतिक्रमण करते हुए दिखाया गया है। उसी समय माया रूपी मारीच अथवा लोभ ने आत्मा रूपी सीता को हर लिया। अर्थात् रावण ने उन्हें बंदी बना लिया। इसलिए सभी को बंदी सम या बानर सम दिखाया जाता है। कहते हैं तब परमात्मा जिन्हें निराकार राम कहा जाता है और रामेश्वर 'शिव' भी कहा जाता है, ने अवतार लिया और बंदरों (बंद हो जिसका दर) की विशाल सेना ली अर्थात् उनकी बुद्धि खोली। अब आप बताइए कि क्या बंदर एक अनुशासन में कार्य कर सकते हैं। वे तो चंचल प्रवृत्ति के होते हैं, उनसे भला राम रावण का विध्वंश कैसे करेंगे? इसका अर्थ यह हुआ कि आज हम मनुष्य ही बंदर हैं जो मोह पाश में बंधे हुए हैं। उन्हें परमात्मा निराकार राम ने ज्ञान देकर अपना बनाया तथा उस सेना द्वारा दसों विकारों रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर आत्मा रूपी सीता को छुड़ाया। इन्हीं घटनाओं को चरितार्थ करने के लिए इतने सारे चरित्रों का वर्णन रामायण और रामचरितमानस में किया गया, क्योंकि कोई भी आत्मा और परमात्मा की कहानी ऐसे नहीं समझ सकता। आज देखिए तो हमारा शरीर एक पंचवटी के समान है जिसके अंदर पाँच तत्व हैं जिसको चलाने वाली आत्मा रूपी सीता को दस विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार (पुरुष) ईर्ष्या, निन्दा, घृणा, आलस्य और भय (स्त्री)) रूपी रावण ने हर लिया और आत्मा जीवन के लक्ष्य व मर्यादा की लक्ष्मण रेखा लांघ गई। एक वृत्तान्त है कि रावण के वश पंच तत्व थे। आज कलियुग में सभी वैज्ञानिक रूप से इतने सक्षम हैं कि बटन दबाने से पानी आ जाता है, वायब्रेशन से मोबाइल फोन चल पड़ते हैं, इशारे से पवन चल पड़ती है, तो इसका अर्थ यही हुआ ना कि हम सारे रावण हैं। ये भी कहा जाता है कि रावण ने एक ऐसी सीढ़ी बना ली थी जिससे वो चाँद पर जा सकता था, तो आज मनुष्यों ने भी अंतरिक्ष यान बना लिया है जिससे वे चाँद पर जा सकते हैं। आज कुम्भकरण जैसे आलसी और निद्रालु लोग भी हैं। आज 'राम' तो केवल नाम लेते हैं, मन तो 'काम' ही के अधीन है।

अत: आध्यात्मिक रूप से देखा जाए तो रावण अभी मरा नहीं है। अगर मर जाता तो उसका पुतला जलाने की ज़रूरत क्या है? आज रावण की तरह हर रोज़ अपहरण और बलात्कार जैसी घटनाएँ समाचार पत्रों में आती हैं, तो आज कौन ऐसा है जो रावण (काम और क्रोध) के वश नहीं है। अत: सही अर्थों में राम को अपने मन में बसाकर दस विकारों को ज्ञान रूपी बाण मारकर तथा उसे योग रूपी अग्नि में जलाकर सच्चा दशहरा मनायें।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान-मैं प्रकृति का मालिक हूँ।

सारे संसार में प्राकृतिक आपदायें बढ़ती जा रही हैं। जब कभी हम इस प्रकार की घटना सुनते हैं तो हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने पीड़ित भाई-बहनों को शांति व शक्ति की सकाश दें। हमारी सकाश उनके लिए सम्बल बन जायेगी। स्थूल सहयोग तो सभी कर सकते हैं लेकिन यह सहयोग सिवाए हम ब्राह्मणों के कोई और नहीं कर सकता है।

योगाभ्यास- प्रकृति के पाँचों तत्वों को पवित्र वायब्रेशन्स दें... कभी सागर के ऊपर जाकर, तो कभी आकाश में स्थित होकर, हम प्रकृतिपतियों से पवित्र वायब्रेशन्स पाकर धरा पुन: सतोप्रधान हो जाएगी...। दिन में अनेक बार अपने देह रूपी प्रकृति से न्यारा होने का अभ्यास करें।

धारणा- मैं-पन का त्याग- मैं-पन की समर्पणता से योग सहज हो जाता है। जीवन में दिव्यता आने लगती है। मन शीतल और शांत होने लगता है। सेवाओं में मैं-पन आते ही जमा का खाता कटने लगता है।

चिंतन- हमें प्रकृति का मालिक बनने के लिए क्या-क्या करना होगा? प्रकृति हलचल कर रही हो तो हमें क्या करना चाहिए? हम अपनी प्रकृति (देह) के मालिक कैसे बनें? कहीं अब तक किसी कर्मेन्द्रिय के अधीन तो नहीं हैं?

ध्यान दें- प्यारे बापदादा की पूरे सीजन की दस अति सुंदर, दिव्य वरदानों और सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों से भरी अव्यक्त मुरलियाँ हैं। तो आइये प्रति सप्ताह एक मुरली का गहन अध्ययन करें और निम्नलिखित पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखकर रविवार की क्लास में सबके साथ बाँटे-इस मुरली से धारणा के लिए आप क्या चुनेंगे? इस मुरली से योग का विशेष कौन-सा अभ्यास लेंगे? इस मुरली में प्यारे बापदादा ने कौन से विशेष इशारे दिये? इस मुरली से आपको पुरुषार्थ की कौन-सी विशेष प्रेरणा मिली और उसे प्रैक्टिकल में लाने के लिए आप क्या करेंगे? इस मुरली से आपको चिंतन की कौन-सी नई प्वाइंट मिली?

स्वमान- मैं इस धरा पर सबसे महान आत्मा हूँ।

भगवान ने जब इस धरा पर नज़र डाली तो उसकी नज़र मुझपर टिक गयी... उसने मुझे अपने कार्य के योग्य समझा... और विश्व कल्याण की ज़िम्मेदारी मुझे सौंप दी... उसने मुझे साधारण मानव से महामानव बना दिया।

योगाभ्यास- इस बार हम अपने चार अलग-अलग स्वरूपों पर स्वयं को एकाग्र करेंगे। आत्मिक स्वरूप- भृकुटि सिंहासन पर विराजमान आत्मा पर। फरिश्ता स्वरूप- अपने सम्पूर्ण फरिश्ते स्वरूप पर। परमधाम में ज्ञानसूर्य शिवबाबा पर। अपने भविष्य दैवी स्वरूप पर।

धारणा- सम्पूर्ण समर्पणता- जब आप सम्पूर्ण समर्पित हो जायेंगे तब सम्पूर्ण बन जायेंगे। आपका हर संकल्प, बोल व कर्म ऐसा हो जो बाबा को समर्पित कर भोग लगाया जा सके।

चिंतन- समर्पणता क्या है? क्यों आवश्यकता है स्वयं को समर्पित करने की? कौन-सी बातें हमें स्वयं को अपने लक्ष्य व ईश्वर के प्रति सम्पूर्ण समर्पित नहीं होने देती? कैसे करें स्वयं को सम्पूर्ण समर्पित? कौन कर सकता है स्वयं को सम्पूर्ण समर्पित? समर्पणता के लिए बाबा के द्वारा उच्चारे पाँच महावाक्य लिखें।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति- प्रिय आत्मन! इस बार हम एक विशेष नशे की ओर आपका ध्यान खिंचवाना चाहते हैं और वो है-भविष्य का नशा। ब्रह्मा बाबा को इस बात का कितना नशा था कि बस मैं ये पुराना शरीर छोड़ भविष्य में मिचनु श्रीकृष्ण बनूंगा। ऐसा कहकर बाबा खुशी में खग्गियाँ मारने लगते थे। हम भी बाबा की तरह दिन में कुछ समय स्वर्ग में रहने लगें और भविष्य के नशे को बढ़ायें कि मैं स्वर्णिम दुनिया में जाकर प्रिन्स बनने वाला हूँ।

उठो ... सम्पूर्णता -- पेज 5 का शेष...

असमर्थता प्रकट की।

देवता ने समझाया - हे योगी, तुम तो राजयोगी हो। यह राज्य-भाग्य तुम्हारा ही है। योगी के तो अंग-अंग शीतल व पवित्र होते हैं, तुम मुझे भूले ही रहते हो। अब मुझ अपने दिव्य स्वरूप को भी स्मृति में रखो। मैं तुम्हारा ही सत्य स्वरूप हूँ, न मेरे में हिंसा है, न कोई अपवित्रता। आओ मेरा वरण करो।

ठीक कहा देव, मैं अपने वर्तमान को ही देखकर भारी हो जाता हूँ। अब मैंने तुम्हें अपने मन में बसा लिया, अब मैं तीव्रता से आ रहा हूँ - योगी में जागृति आई। हाँ योगी - अब दिव्य संस्कारों का बाना पहनकर तेजी से मेरे पास आ जाओ - कहा देवता ने। योगी उमंग से आगे बढ़ता है। उसे लगा कि शीघ्र ही वह लक्ष्य को पा लेगा। परंतु उसे ठोकर लगी, वह गिरा। देव हँसा - सावधानी से नहीं चले, ठोकर लग गई। तुमने नहीं देखा कि मैं-पन, मान-शान के छोटे-छोटे पत्थर ज़मीन में गड़े हैं, तुम इन्हें पहचान भी नहीं पाये। योगी की मानो तीसरी आँख खुली... ओह, मैं आगे बढ़ा तो मान-शान की ठोकर लग गई। अरे भगवान् जबकि स्वयं मुझे मान दे रहा है और मैं मनुष्यों से मान पाने के लिए ठोकरें खा रहा हूँ। मेरा देव स्वरूप स्वयं मेरा स्वागत कर रहा है, मैं मनुष्यों से स्वागत चाहता हूँ। वाह, मेरा विवेक क्यों धुंधला गया। ठीक है, मैं इन सबको छोड़ता हूँ। वह पुन: उठकर साहस बटोरता है।

देव पुन: बोला - इस ताज को पहनने के लिए निष्काम भाव से विश्व-कल्याण की वृत्ति धारण करो, सबको सुख दो, सबके पालनहार बनो, तभी तो तुम्हें प्रजा विष्णु के रूप में स्वीकार करेगी। याद रखना कहीं विश्व-कल्याण करते-करते पुन: आसक्त न हो जाना।

नहीं, अब मैं सम्पूर्ण वैराग्य धारण करके शीघ्र ही आया कि आया, बस, मैं आया कि आया। योगी तेजी से आगे बढ़ता है, परन्तु पुन: उसके कदम धीमे पड़ गये। देवता मुस्कुराया - योगी ये ताज विश्व-महाराजन के लिए है, मैंने तो समझा था कि तुम इसके योग्य हो, परंतु तुममें तो अभी भय है। तुम विघ्नों से घबराते हो, तुम निंदा से डरते हो, कुछ भी सहन करने का साहस तुममें नहीं है, इस हालत में यह ताज तो तुम्हारे सिर से गिर जायेगा। योगी बोला - मैं इस ताज को अवश्य धारण करूंगा। इसके लिए ही तो मैंने आज तक अनेक कुर्बानियां दी हैं। आज से मैं हर तरह के भय को तिलांजली देता हूँ। लो, पहनाओ मुझे ये ताज। हाँ, हाँ, शाबाश! बड़े बहादुर हो तुम, परंतु उतावले न बनो, विश्व महाराजन गंभीर व धैर्यचित्त होंगे। धैर्य न खोओ योगी, ये ताज तुम्हारा ही है। आओ, देवता ने कहा। योगी धीमी गति से आगे बढ़ता है, परन्तु उसके चेहरे पर निराशा के चिन्ह अभी भी दिखाई दे रहे हैं। देवता पुन: कहने लगा - योगी, अपना चेहरा दिव्य तो बनाओ। मेरा चेहरा देखो, विश्व महाराजन से रॉयल्टी स्पष्ट झलकती है। तुमने ये कैसा रूप धरा है। योगी को एहसास हुआ, मुझे खेद है देव, सचमुच मैं अपने स्वमान हो भूल गया था। स्वमान के बिना हम सिंहासन पर कैसे सुशोभित होंगे। लो, मैं सभी हीन विचारों को त्यागकर अपने स्वमान में स्थित होता हूँ।

शाबाश योगी, तुम योग्य हो, देवता अपनी बांहें फैलाकर योगी का आह्वान करता है। परन्तु न जाने कौन सी शक्ति योगी को रोक रही है। अब उसके मन में ईश्वरीय महावाक्य गूंजने लगे - विश्व - महाराजन वही बनता है जो किसी न किसी तरह सभी का सहयोगी बनता है, जिसने दूसरों की स्थिति को महान् बनाने में सहयोग दिया हो, दूसरों की समस्याएं हल करने में सहयोग दिया हो। विश्व-महाराजन वही बनता है जो सबके दिलों पर राज्य करता हो, जो सम्पूर्ण शक्तिशाली हो। ये महावाक्य याद आते ही योगी गंभीर हो गया, मुझसे तो कई नाराज़ हैं, मैं कैसे विश्व पर राज्य करूंगा।

उसे गंभीर देख देवता बोला - क्यों गंभीर हो गये योगी, चलो, मैं ही तुम्हें एक रहस्य बता देता हूँ, उसे जल्दी धारण करके मेरे पास पहुंच जाओ। बड़ी कृपा होगी देव, योगी ने आग्रहपूर्वक कहा।

देव बोला - बहुत रॉयल बनो, अभी तुममें मांगने के संस्कार हैं। तुम बुद्धि रूपी हाथ भी फैलाते हो, दाता बनो, विशालता धारण करो स्वयं के प्रति, किसी से कुछ भी संकल्प से भी न मांगो, न स्वीकार करो।

बस समझ गया, धारण करता हूँ इस महानता को भी मैं, अब मैं योगबल से अति शक्तिशाली बनकर तुम्हारे पास आ रहा हूँ, अब मुझे कोई भी नहीं रोक सकेगा। और इस प्रकार योगी तीव्रता से आगे बढ़ता है।

उसी समय फरिश्ता भी देवता के पास प्रकट होता है। फरिश्ता और देव दोनों ही उसे आगे बढ़ता देख आनंदित हो रहे हैं। दोनों ही इशारा कर रहे हैं, चले आओ, चले आओ।

इस मिलन की खुशी में योगी को छोटे-छोटे विघ्न व छोटी-छोटी बातें खेल-सी लग रही हैं और योगयुक्त हुआ योगी दोनों के समीप पहुंच जाता है। दोनों बारी-बारी से उसका आलिंगन करते हैं। फिर दोनों, उसके मस्तक पर तिलक लगाते हैं। फरिश्ता उसके गले में माला पहनाकर देखते ही देखते उसमें समा जाता है। अब देव उसे ताज पहनाता है। और वह भी उसमें समा जाता है।

योगी अब दिव्य स्वरूपधारी बन जाता है, जिसमें फरिश्ता व देवता दोनों दिखाई दे रहे हैं.... उसके सिर पर ताज है और पीछे प्रभामंडल।

औरंगाबाद-बिहार। जिला सांसद सुशील बाबू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सविता। साथ हैं ब्र.कु. संगीता।

डिबाई। एस.डी.एम. हरिशंकर जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कुसुम। साथ हैं ब्र.कु.रचना।

नवी मुम्बई-तुर्भे। सांसद कुँवर हरिवंश सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शीला। साथ हैं ब्र.कु.मीरी, नगरसेवक संतोष शेट्टी तथा जिलाध्यक्ष रमेश त्रिपाठी।

रायबरेली-उ.प्र.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर ब्र.कु. ज्योति द्वारा राखी बंधवाने के पश्चात् ईश्वरीय प्रसाद ग्रहण करते हुए एयर मार्शल वी.के.वर्मा। साथ हैं ब्र.कु.जाह्नवी।

वडनगर। जी.ई.बी. विभाग के एम.बी.पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.ज्योत्सना व ब्र.कु.उज्जवल।

शुजालपुर सिटी। जेलर रोहिदास पिकले को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.वीणा।

वैकुन्ठपुर-छ.ग.। पुलीस अधीक्षक बी.एस. ध्रुव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.रेखा।

सिद्धपुर। रक्षाबंधन के पर्व पर राखी बांधने के बाद समूह चित्र में पी.आई. जिगर पंडित, भाजपा कॉर्पोरेटर भरत मोदी, ब्र.कु. दक्षा, ब्र.कु.नीपा तथा ब्र.कु.वसंत।

नांगल डैम। तीर्थ सिंह चड्ढा,डिप्युटी कमाण्डेंट, सी.आई.एस.एफ. को राखी बांधने के बाद उपस्थित हैं ब्र.कु.पुष्पा, ब्र.कु.सुमिता, ब्र.कु.रमा, ब्र.कु. राम प्रकाश तथा अन्य अधिकारी।

रुड़की। एस.डी.एम.नितिन कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सोनिया।

कोटद्वार-उत्तराखण्ड। श्री कृष्ण जन्माष्टमी की झाँकी का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्षा रश्मि राणा। साथ हैं ब्र.कु. ज्योति।

वाबैन-कुरुक्षेत्र। उद्योगपति देवकी नन्दन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कमलेश।

आत्मा को सात तरह के भोजन की आवश्यकता

शरीर पाँचों तत्व उतनी ही मात्रा में ग्रहण करता है जितनी की शरीर की आवश्यकता होती है। ये शरीर की वास्तविकता है, क्योंकि शरीर उसी पाँच तत्वों से बना हुआ है। इसी तरह इस शरीर में जो चैतन्य शक्ति आत्मा है, आत्मा को भी जीवन जीने के लिए कुछ चाहिए या नहीं चाहिए? कई बार कई लोग समझते हैं कि आत्मा निर्लेप है। उसे कुछ नहीं चाहिए, नहीं। आत्मा को कहा ही जाता है कि 'आत्मा सतोगुणी' है। सतोगुणी अर्थात् उसको भी जीवन जीने के लिए सात गुणों की आवश्यकता होती है। वे सात गुण कौन से हैं जो जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं? सर्वप्रथम उसे 'आध्यात्मिक ज्ञान' चाहिए। आध्यात्मिक ज्ञान क्यों चाहिए? क्योंकि इसी आध्यात्मिक ज्ञान से मनुष्य जीवन में रहा हुआ अज्ञानता का अंधकार समाप्त होता है। मनुष्य जीवन में सबसे बड़ा अज्ञान अगर है तो वो है 'अहंकार'। आज अहंकार के कारण मनुष्य के कर्म कैसे होने लगे हैं? मनुष्य के सम्बन्धों में कितने कलह क्लेश उत्पन्न हो रहे हैं, कितने परिवार टूट रहे हैं, इस अहंकार के कारण। आज मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता क्यों है? क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान ही इस अज्ञान को खत्म कर सकता है। जब अहंकार समाप्त हो जाता है तब आपसी सम्बन्धों में मधुरता आती है जिससे हम आपस में एक अच्छी समझ डेवलप कर सकते हैं। इसीलिए आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता होती है। उसी के साथ-साथ जीवन में शुद्धि और पवित्रता भी चाहिए।

कई बार हम देखते हैं कि किसी दो व्यक्ति की आपस में बहुत अच्छी दोस्ती होती है। कुछ समय के बाद देखो तो वह दोस्ती टूट जाती है और वे एक दूसरे से दूर हो जाते हैं। अगर उनसे पूछा जाए कि आप दोनों में तो बहुत दोस्ती थी, क्या हुआ? कहेंगे कि हमें बाद में पता चला कि ये व्यक्ति अंदर से कुछ और बाहर से कुछ और था। बाहर से बड़ी सफाई वाली बातें कर रहा था लेकिन अंदर से उसका मन मैला था। उसकी भावनाओं में शुद्धि नहीं थी, उसके विचारों में शुद्धि नहीं थी, उसके व्यवहार में शुद्धि नहीं थी इसलिए हमें अच्छा नहीं लगा और हम उससे दूर हो गये। इंसान को अच्छा कहाँ लगता है ? जहाँ विचारों की शुद्धि हो, व्यवहार की शुद्धि हो, भावनाओं की शुद्धि हो। आज यही पवित्रता जीवन में क्यों चाहिए? एक बच्चा जब जन्म लेता है तो कितना पवित्र और मासूम होता है यही उसकी वास्तविकता है। जितना हम जीवन में पवित्र भावनाओं को प्रवाहित करते हैं, उतना ही आत्मा का तेज बढ़ता है। लेकिन जहां अहंकार हो, अशुद्ध भावनायें हो उस सम्बन्ध में कभी भी नि:स्वार्थ प्रेम पनप नहीं सकता है। आज हरेक को जीवन में क्या चाहिए? प्रेम चाहिए। एक बच्चे को भी प्यार चाहिए। बड़े बुजुर्ग के साथ यदि कोई प्यार से व्यवहार करता है तो उसे भी अच्छा लगता है। ये नहीं कि बड़े बुजुर्ग ने सारा जीवन बहुत प्यार पाया है। बुढ़ापे में अगर प्यार नहीं भी मिला तो चलेगा, नहीं। हर इंसान को प्यार चाहिए और वो भी नि:स्वार्थ प्यार चाहिए। नि:स्वार्थ प्यार कैसे सम्बन्धों में पनप सकता है? जब आपसी समझ हो, पवित्र भावनायें हो, तब नि:स्वार्थ प्रेम प्रवाहित होता है। आज कैसी विडम्बना है कि हर मनुष्य प्यार चाहता है लेकिन यदि कोई प्यार से बात करता है तो उसे टेंशन होने लगती है कि ये व्यक्ति इतने प्यार से क्यों बोल रहा है? क्या चाहिए इसे? अर्थात् वह स्वयं को रिलैक्स महसूस नहीं करता है, चाहिए उसको भी प्रेम। जहाँ ये तीनों गुण हैं, अंडरस्टैन्डिंग है अर्थात् ज्ञान है, पवित्र भावनायें हैं, प्रेम है, वहां व्यक्ति रिलैक्स फील करता है, वहाँ ही शांति होती है। जहाँ ये चारो हैं, वहाँ जीवन में सच्चे सुख का अनुभव होता है और जहाँ ये पांचो है वहाँ जीवन की सर्वोच्च प्राप्ति आनंद है। आज मनुष्य के जीवन में आनंद नहीं है, खुशी नहीं है। हर व्यक्ति यही चाहता है कि मेरे जीवन में खुशी हो, आनंद हो। जहाँ ये छः गुण हैं वही 'आत्मशक्ति' का अनुभव होता है। क्योंकि ये छः गुण नहीं बल्कि छः शक्तियाँ हैं। ज्ञान की शक्ति, पवित्रता की शक्ति, प्रेम की शक्ति, शांति की शक्ति ये सब शक्तियाँ हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यही आत्मा का स्वधर्म है। - क्रमश:

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

पीस ऑफ माइंड चैनल अब हर गाँव में उपलब्ध

आप सभी को यह जानकर अति हर्ष होगा कि आपका पसंदीदा आध्यात्मिक चैनल 'पीस ऑफ माइंड' अब भारत के लगभग सभी डिस टी.वी. पर उपलब्ध है। आप इस 24 घण्टे चलने वाले आध्यात्मिक चैनल के माध्यम से टेंशन फ्री हैप्पी लाइफ, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, स्वास्थ्य तथा मानसिक अवसाद से मुक्त होने के लिए आध्यात्मिक कार्यक्रमों का घर बैठे सुन व देखकर लाभ उठा सकते हैं।

टाटा स्काई में 192 नं. , एयरटेल डिजिटल टी.वी.में 686 नं., विडियोकॉन डी.टू.एच. में 497 नं. तथा रिलायंस बिग टी.वी. में 171 नं. पर 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध होगा। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें – 9414151111, 8104777111

बारडोली। बस डिपो मैनेजर मनोज चौधरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.जयश्री।

ब्रह्माकुमारी संस्थान की डॉक्टर टीम के साथ राहत समग्री का वितरण

राहत सामग्री वितरण की तैयारी करतें हुए ब्रह्माकुमार भाई-बहने।

जम्मू कश्मीर। जम्मू कश्मीर में आये महाप्रलय के पश्चात् राहत पहुँचाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के ग्लोबल हॉस्पिटल के डॉक्टर्स की टीम दवाई और जीवनावश्यक चीज़ों के साथ जम्मू में पहुँची। वहाँ के हालात बहुत ही दर्दनाक हैं, बाढ़ग्रस्त लोगोको गर्म कपड़े ,कंबल तथा आवश्यक दवाईयां दी गई।

ऐसे में वहाँ के ब्रह्माकुमारीज़ के लोकल ब्रांच द्वारा बाढ़ग्रस्त लोगों के लिए 'स्पेशल रिलीफ कैम्प एंड मेडिटेशन' नामक शिविर लगाया गया है, जिसमें बातचीत के लिए एच.ए.एम. रेडियो, भारतीय चिकित्सा संघ द्वारा चिकित्सा कैम्प तथा जीवनावश्यक वस्तुयें उपलब्ध कराई जा रही हैं। आपका सहयोग अपेक्षित है।

पता- ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउण्ट आबू – 307510

एकाउण्ट नेम - ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर

एकाउण्ट नम्बर 4087020111000229 : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, माउण्ट आबू, आई.एफ.एस.सी.कोड: UBIN0540871

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें – 7891109999, 9783559999

E.mail - karuna@bkivv.org

कथा सरिता

साहसहीन सेना की हार

प्राचीनकाल की बात है। पहाड़ी प्रदेश में एक राजा राज्य करता था। चूंकि राज्य पहाड़ों से घिरा था, इसलिए कभी किसी ने वहाँ आक्रमण नहीं किया। राजा के सैनिक प्रशिक्षित तो थे, किन्तु लड़ाई में उन्होंने कभी हिस्सा नहीं लिया था। चूंकि ऐसा अवसर ही नहीं आया था, इसलिए राजा सहित सभी सैनिक निश्चिंत रहते थे, मगर एक बार किसी राज्य ने हिम्मत दिखाई और इस राज्य पर हमला कर दिया। वे लोग पूरी तैयारी के साथ आये थे। पहाड़ी प्रदेश का राजा भी वीर था। उसने अपने सैनिकों को बुलाकर युद्ध संबंधी निर्देश दिये। फिर पूर्वाभ्यास हेतु एक छद्म सेना (मिट्टी की) निर्मित की और अपने सैनिकों को आदेश दिया, 'आगे बढ़ो और वार करो। सैनिकों ने राजा को हौसला तो बहुत दिलाया था, किंतु राजा का आदेश पाने के बाद भी सैनिक अपने स्थान से एक इंच भी आगे नहीं बढ़े। बस, उन सभी ने अपनी-अपनी तलवार म्यान से निकालकर ऊपर उठाई और जोर से समवेत होकर चिल्लाए। राजा ने पूछा, क्या कर रहे हो? सैनिक बोले, राजन! आगे बढ़ने से पहले हम अपने दुश्मन को दिखाना चाहते हैं कि हम लोग तैयार हैं। तुम वापस चले जाओ। राजा तत्क्षण समझ गया कि उसके सैनिक शत्रु सेना से डरे हुए हैं और अपनी दुर्बलता छिपाने के लिए ऐसा कर रहे हैं। चूंकि उन्होंने कभी युद्ध लड़ा ही नहीं, इसलिए वार करने की हिम्मत उनमें नहीं है। तब राजा ने उनसे कहा, तुम लोग तलवारें रख दो और लौट जाओ। हम यह युद्ध बिना लड़े ही हार चुके हैं, क्योंकि जीतने के लिए साहस अनिवार्य है। सच्ची वीरता कहने में नहीं, बल्कि दिखाने में अभिव्यक्त होती है और इसके लिए मानसिक दृढ़ता व आत्मविश्वास जरूरी है।

सर्वोत्तम दान

किसी शहर में एक मुफलिसी पसंद संत रहा करते थे। उपलब्धियां आला दर्जे की थीं। वे बच्चों के साथ ही खेलते और अपने हाथों से खूबसूरत खिलौने बनाकर देते। एक दोपहर वे पेड़ के साए में बैठे घास, फूल व पत्तों से एक छोटे बगीचे की प्रतिकृति बना रहे थे। गांव की एक महिला वहाँ से गुजरी। उस बेहद सुंदर बगीचे को देखकर उसने पूछा, आप यह क्या बना रहे हैं? संत ने कहा-मैं स्वर्ग का बाग बना रहा हूँ, क्या तुम इसे खरीदोगी? महिला संत को जानती थी इसलिए उसने इसकी कीमत पूछी। संत ने कहा इस स्वर्ग के बगीचे का मूल्य है, एक हजार रुपये। उस समय एक हजार रुपये बहुत बड़ी रकम होती थी लेकिन महिला ने संत को मदद करने के उद्देश्य से एक हजार रुपये देकर उस बगीचे को खरीद लिया। संत ने हजार रुपये का अनाज-कपड़े खरीदकर शहर के गरीब बेसहारा लोगों में बांट दिया। उस रात महिला को स्वप्न में खरीदा वह बगीचा दिखा जिसमें से उसे एक स्वर्ग के समान बगीचे में प्रवेश मिला। वहाँ रत्नों से जड़े महल, बाग व परम आनंद का वातावरण था। वहाँ महिला के पास एक देवदूत आया और उसने अपनी किताब में उस स्वर्ग के बाग को उसके नाम लिख दिया। दूसरे दिन से वह एक अनजान प्रसन्नता में रहने लगी। उसके पति ने उसकी खुशी का कारण पूछा। पत्नी ने सारी बात बता दी। उसका पति संत के पास गया और बगीचा खरीदने की इच्छा जताई। संत ने कहा-मित्र, तुम्हारी पत्नी ने बगीचा बिना किसी प्रत्युपकार की आशा के खरीदा और उसे वह मिला। तुम प्रतिफल की आशा से वह खरीदने आये हो इसलिए तुम्हें वह प्राप्त न हो सकेगा। बिना प्रतिफल की आशा से किया गया दान ही सच्ची कृपा का कारक बनता है। वह आशाओं से परे फल देता है। जो व्यक्ति किसी आशा से दान करता है उसका भाव व्यापार का होता है और वह निष्फल ही होता है।

सुख का राज़

रमण महर्षि के एक भक्त के युवा बेटे का निधन हो गया। वह बहुत दुखी होकर उनके पास आया और कुछ प्रश्न पूछे जिनसे उनका दुख प्रकट हो रहा था। महर्षि ने उससे कहा, 'खुद से पूछो कि कौन दुखी हो रहा है।' हालांकि, इससे उनका समाधान नहीं हुआ। फिर महर्षि ने कहा, मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। राम और कृष्ण नाम के दो युवकों ने अपने-अपने माता-पिता से कहा कि वे विदेश जाकर बहुत-सा पैसा कमाना चाहते हैं। दोनों के पालकों ने अनुमति दे दी। हालांकि, विदेश पहुँचते ही कृष्ण को कोई बीमारी हो गई और कुछ ही दिनों में उसकी मौत हो गई। राम ने व्यवसाय किया और वह अच्छा-खासा कमाने लगा। सोचने लगा काफी पैसा हो जायेगा तो स्वदेश लौटकर माता-पिता की सेवा करूँगा। एक दिन उसकी मुलाकात अपने गाँव के व्यक्ति से हुई। वह घर जा रहा था। उसने कहा, 'कृष्ण के माता-पिता को उसकी मौत का समाचार दे देना और मेरे माता-पिता से कहना कि मैं खुश हूँ और जल्दी ही लौट आऊंगा।' उस व्यक्ति ने समाचार तो पहुँचा दिया पर कृष्ण के माता-पिता को राम का समाचार दे दिया और राम के पालकों को कृष्ण का। अब राम के माता-पिता अपने पुत्र के निधन के शोक में डूब गए जबकि कृष्ण के पालक खुश हो गए कि उनका बेटा लौटने वाला है। दोनो परिवारों ने अपने बेटों को देखा नहीं था पर वे उन्हें मिली खबर के अनुसार दुखी व खुश थे। महर्षि ने कहा, 'हमारी भी स्थिति ऐसी है। हम मन की कही ढ़ेर सारी बातों पर भरोसा कर, जो नहीं है उसके होने और जो है उसके न होने का विश्वास कर लेते हैं। यदि हम मन पर भरोसा करने की बजाय हृदय में जायें और वहाँ बैठे ईश्वर का साक्षात्कार कर लें तो हमारे दुखी होने का कोई कारण ही नहीं रहेगा।'

धैर्यवान की जीत

जापान में एक राजा रहता था। उसे चीनी मिट्टी के फूलदान इकट्ठा करने का बड़ा शौक था। उसके खजाने में देश-विदेश से लाए गए बेशकीमती फूलदानों का संग्रह था। फूलदानों की देखरेख के लिए उसने 20 कर्मचारियों को लगा रखा था, जो प्रतिदिन उन बेहतरीन कलाकृतियों की साफ-सफाई करते। एक दिन सफाई के दौरान एक कर्मचारी के हाथ से एक फूलदान टूट गया। सब लोग घबरा गए और बात राजा तक पहुँची। क्रोध में आगबबूला राजा दौड़ता हुआ उस कक्ष तक आया और उसने फूलदान तोड़ने वाले कर्मचारी को पेश करने को कहा। बूढ़ा सेवक कांपते हुए उपस्थित हुआ और माफी मांगने लगा। राजा का गुस्सा सांतवें आसमान पर था। उसने उस सेवक की बात पूरी सुने बगैर ही मौत की सजा सुना दी। वह बोला-इस कठोर दंड से अन्य सेवक अपने काम के प्रति और अधिक गंभीर रहेंगे। बूढ़े सेवक ने सारी बात सुनी और कोई कुछ समझ पाये इससे पहले तड़ातड़ बचे 19 फूलदान भी तोड़ दिये। राजा, मंत्री और दरबारी देखते रह गए। सैनिकों ने उसे धर दबोचा। गुस्से और आश्चर्य से राजा ने पूछा-तुमने यह क्यों किया? बूढ़े सेवक ने जवाब दिया-मेरा मरना तो तय है लेकिन बाकी के फूलदानों को तोड़कर मैंने 19 लोगों की जान बचाई है। राजा ने बूढ़े के साहस व समझ की प्रशंसा की और उसे छोड़ दिया। कार्य के दौरान गलती होना स्वाभाविक है और यही कारण है कि अत्यधिक चिंतित होना गलतियों को आमंत्रण देना है। ऐसे समय में जबकि हम किसी कारणवश भारी मुसीबत में हों, तो धैर्य न खोकर बुद्धिमता से उसका मुकाबला करना ही सही नीति है। बुद्धिमान और धैर्यवान व्यक्ति ही जीवन में सदैव विजय प्राप्त करता है।

भूल हो जाने पर ...

पेज 2 का शेष...

ऐसी भीड़ या लोगों का आना जाना भी नहीं होता है जो कुत्ता किसी को नुकसान पहुँचाये!''

''आपका कहना सही है, मुझे कुत्ता खुला रखने का प्रलोभन था लेकिन कायदे की दृष्टि से गलत ही है ना!''

''हाँ, लेकिन यह छोटा सा कुत्ता किसी को क्या नुकसान करने वाला था'' – पुलिस ने कहा।

''हाँ, परंतु वो कभी किसी गिलहरी को भी मार सकता है'' मैंने कहा।

''देखो, मुझे लगता है कि आप इस बात को गम्भीरता से लेकर बैठे हो। आपको एक रास्ता बताता हूँ, आप मुख्य रास्ते को बदल कर अंदर के भाग में कुत्ते को लेकर घूमें, जिससे कुत्ते पर मेरी नज़र न पड़े। बस, हम यह बात भूल जाते हैं'' – पुलिस ने कहा। पुलिसमैन के अहम् की भूख पूर्ण हुई और वह शांत हुआ।

भूल हो जाने पर यह पाँच बातें याद रखनी चाहिए :–1. अपनी भूल को नम्रता और सहृदयता से स्वीकार करें।

2. भूल बताने वालों को उपेक्षित किये बिना ही उसे सम्मानपूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिये।

3. हम अगर झूठे हैं तो व्यर्थ दलीलबाज़ी में उतरकर बचने की कोशिश करने के बदले बिगड़ी बाज़ी को सुधारने की कोशिश करें।

4. एक कहावत है कि ''लड़ने से आप उचित परिणाम ला नहीं सकते, लेकिन समझदारीपूर्वक हार स्वीकार कर लेने से अपने मुताबिक फल प्राप्त हो जाता है।

5. यदि आप गलत हो तो उत्साहपूर्वक भूल को स्वीकार कर नम्रतापूर्ण मीठे शब्दों से सामने से ही व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कर हार को जीत में बदल सकते हैं।

ऋषिकेश। सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी जगदीशानन्द जी। साथ हैं संत धर्मानन्द महाराज तथा ब्र.कु.आरती।

कुचामन-नागौर। मॉर्निंग न्यूज़ फेस्टीवल में ज्ञान-प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए नेशनल अवार्डेड फोटोग्राफर, ई.टी.वी. रिपोर्टर मुरारीलाल, ब्र.कु.अनीता तथा अन्य।

घणसोली। धार्मिक सभा का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शीला, कर्नाटका मल्ला पेपर के एडिटर चंद्रशेखर, रमेश पुजारी, अन्नी शेटटी, सुरेश शेटटी तथा अन्य।

अलकापुरी-बड़ौदा। ''नींद की समस्या का समाधान'' विषय पर आयोजित सेमिनार का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए जी.एच.आर.सी. के जीयियॉट्रीशियन डॉ.महेश हेमाद्री, ब्र.कु.डॉ.निरंजना, ब्र.कु.नरेन्द्र पटेल, अनील बठीजा तथा अन्य।

दिल्ली-आर.के.पुरम। ए.के.वर्मा,डी.जी.,सी.पी.डब्ल्यु.डी. को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.अनीता एवं ब्र.कु.मनिषा।

इन्दौर-उषानगर। भाजपा युवा नेता एवं पार्षद सुधिर देड़गे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.ललिता।

सावधान! कहीं सोच ही शत्रु तो नहीं?

संस्कृत उवाच है, अलसस्य कुतो विद्या। अविद्यस्य कुतो धनम्।। अधनस्य कुतो मित्रम्। मित्राय कुतो सुखम्।। अर्थात् आलसी को विद्या कहाँ, बिना विद्या के धन कहाँ, बिना धन के मित्र कहाँ और बिना मित्र के सुख कहाँ। ये चीज़ें आप अपने जीवन में देखते भी होंगे, जो जितना आलसी है उसके पास लोग बैठना पसंद नहीं करते क्योंकि उसके संकल्प बेहद कमज़ोर और नकारात्मक होते हैं। संकल्प शक्ति ही जीवन शक्ति है, यह जीवन की तमाम प्राप्तियों का आधार है। 'प्रथम सुख निरोगी काया' की संकल्पना तो आपने सुनी ही होगी जिसके लिए सभी कितने तरह के जतन करते हैं कि हमारा शरीर बिल्कुल स्वस्थ रहे। तो इसके लिए हमको तीन स्तरों पर कार्य करना होगा, पहला शारीरिक, दूसरा मानसिक, तीसरा आत्मिक।

सभी को पता है कि हमारे शरीर का सारा तंत्र मस्तिष्क से संचालित होता है और मस्तिष्क को हमारी पराभौतिक शक्ति चलाती है जिसको हम आत्मा या आध्यात्मिक ऊर्जा भी कहते हैं। यह ऊर्जा हमारी जीवनी है, संजीवनी है जिसके निकल जाने मात्र से शरीर कंकाल हो जाता है।

हमारा शरीर पंच-तत्वों से निर्मित है जो क्रमश: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश से बनता है। आज अपने चारो तरफ हम देखते हैं कि मानसिक परेशानियाँ तथा ला-ईलाज बीमारियों ने हमें तंग कर रखा है। सारे तत्व हमें सहयोग नहीं दे रहे और हम अपना सारा ध्यान दवाइयों या फिर यौगिक क्रियाएँ करने में लगा रहे हैं। कहीं इन तत्वों के खराब होने का कारण हमारे संकल्प तो नहीं हैं? या कुछ और।

पृथ्वी तत्व से हमारे शरीर का हड्डी, मांस, चर्म, केश आदि चीज़ें निर्मित हैं। आज इनमें विकृति आ गई है। इसका कारण चिकित्सा विज्ञान, खान-पान आदि को बताता है, वहीं मनोविज्ञान सोच को बताता है, लेकिन आध्यात्मिकता इससे कुछ अलग मत रखती है। आध्यात्मिकता का कहना है कि जब व्यक्ति अपने मनोविकारों के वश होता है, उसमें से मुख्यत: काम विकार के वश होता है तो उससे ये सारे अंग प्रभावित होते हैं। जब शरीर उत्तेजित होता है तो उस समय हमारे शरीर के लगभग दो से पाँच हज़ार शरीर की कोशिकाएँ मर जाती हैं जिससे उस समय तो हमें पता नहीं चलता लेकिन बाद में या कुछ वर्ष बाद सभी को हड्डियों, मांसपेशियों, आँखों आदि में तकलीफ या तनाव होने शुरु हो जाते हैं। आज पूरी आबादी काम विकार के वश है, जिसमें बारह साल से लेकर पचास साल तक के लोगों में ये सारी विकृतियाँ हैं जिसका मूल कारण काम विकार है। तो यदि आपको इन दर्दों से निज़ात पानी है तो सबसे पहले संयम और नियम का पालन करना होगा। इसमें कई लोग अपने भी दृष्टिकोण देते हैं कि आपलोग मना करते हैं और डॉक्टर्स सपोर्ट करते हैं, वे कहते हैं इससे कुछ नहीं होता लेकिन आप किसी भी डॉक्टर को देख लें, क्या वे ठीक हैं? यदि ठीक हैं तो मेरा कहना गलत हो सकता है, निर्णय मैं आपके ऊपर छोड़ता हूँ। दुनिया में पृथ्वी तत्व को शक्ति के साथ जोड़ा जाता है, इसलिए आपने देखा होगा कि देवियों के नवरात्रि पर्व में घर की सफाई आदि के लिए मिट्टी का प्रयोग करते हैं। इसका दूसरा उदाहरण यह भी है कि धरती ने सबका भार उठा रखा है, इसलिए इससे ज़्यादा शक्तिशाली कोई भी चीज़ हो नहीं सकती। इसलिए शक्ति प्रतीक के रूप में लोग हनुमान जी या फिर कुंवारी कन्या माँ दुर्गा की उपासना करते हैं, क्योंकि दोनों को ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी दिखाया गया है। अर्थात् जिसने काम विकार को जीता, तभी तो आप उनकी उपासना करते हैं और उपासना के समय संयमित होकर रहते हैं, अर्थात पवित्रता का पालन करते हैं। उन्हें शक्ति रूपी लाल रंग व लाल चुनरी चढ़ाते हैं। तो काम विकार को जीतने के लिए आपको आत्मा के शक्ति स्वरूप का चिंतन करना चाहिए। इस चिंतन से आपकी सारी शक्तियाँ जागृत हो जायेंगी और आप धीरे-धीरे काम विकार पर विजय प्राप्त कर लेंगे। ज़रूरी नहीं है कि यह कार्य कुछ घंटे, कुछ हफ्ते या कुछ महीनों में ही संभव हो, इसमें समय लग सकता है लेकिन होगा अवश्य। परमात्मा के लाल रंग का प्रकाश का चिंतन आपकी सारी शक्तियों को पुन: जागृत करेगा। आप हमेशा जागरुक होकर अपनी दृष्टि को संयमित रखेंगे। यह स्वत: होता जायेगा।

-क्रमश:... ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना–ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-
Email- mediabkm@gmail.com
M-8107119445

मन की बातें

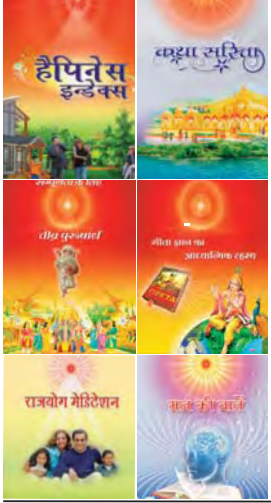

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: बाबा ने हम सभी को गीता का भगवान सिद्ध करने को बहुत प्रेरित किया है, परंतु इस फील्ड में ज्यादा काम होता हुआ नज़र नहीं आता। हम इसमें क्या योगदान कर सकते हैं क्योंकि आजकल तो अनेक जगह गीता के भगवान के चित्र भी हटा दिए गए हैं। लगता है किसी को इसमें ज्यादा रुचि नहीं है, परंतु बाबा का इसमें बहुत जोर है।

उत्तर: बाबा ने ही एक बार कहा है कि जब तुम गीता ज्ञान का स्वरूप बन जाओगे तो गीता का भगवान भी सिद्ध हो जाएगा। कोर्स आदि कराने में, प्रदर्शनी और मेलों में भी गीता के भगवान के चित्र पुन: रखने चाहिए। हो सके तो इस विषय पर एक अलग प्रदर्शनी बनायी जाए।

क्योंकि यह विवादास्पद विषय है इसलिये इसमें लोगों का विरोध भी सुनना पड़ेगा। उसके लिये भी सबको तैयार रहना चाहिए क्योंकि जब तक गीता के भगवान के बारे में सच्ची जानकारी नहीं होगी, किसी का भी योग परमात्मा से लगेगा नहीं। श्रीमद्भगवद्गीता से कुछ अच्छे-अच्छे श्लोक चुनकर उनकी व्याख्या भी करनी चाहिए और एक अभियान भी चलाया जा सकता है कि गीता ज्ञान हमें जीवन जीने की कैसी कला सीखाती है। वो सभी के समक्ष रखा जाए क्योंकि आजकल की नयी पीढ़ी तो गीता के बारे में कुछ नहीं जानती। ये ग्रंथ केवल विद्वानों तक सिमट कर रह गया है, जबकि इसे हमें आम जनता तक ले जाना चाहिए।

प्रश्न: मैं 10 साल से ज्ञान में हूँ, कुमार हूँ। मेरी स्थिति अब तक बहुत सुंदर रही परंतु अचानक ही मन में बहुत व्यर्थ संकल्प आने लगे हैं। मन में यदि कोई एक भी संकल्प आ जाता है तो मैं उसे रोक ही नहीं पाता। इसके लिए क्या सहज विधि अपनाऊँ?

उत्तर: हमारे चारों ओर बहुत ही ज़्यादा निगेटिव एनर्जी प्रवाहित हो रही है। उसका प्रभाव हर मनुष्य पर पड़ता हुआ दिखायी देता है। इससे बचने के लिए सर्वप्रथम तो अमृतवेले शक्तिशाली योग और मुरली का सम्पूर्ण रस प्राप्त करना आवश्यक है। साथ ही रोज सवेरे अपने चारों ओर शक्तिशाली प्रभामण्डल निर्माण करना भी परम आवश्यक है ताकि इस प्रभामण्डल में बाहर की निगेटिव एनर्जी प्रवेश ना कर सके और इसकी विधि है - उठते ही 7 बार दृढ़तापूर्वक अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और अपने चारों ओर शक्तियों का घेरा बना हुआ महसूस करें।

जब भी आपको ऐसे संकल्प सताने लगें तो 10 मिनट के लिए अव्यक्त मुरली का अध्ययन करें और फिर 5 मिनट के लिये 5 स्वरुपों का अभ्यास कर लें। उस स्थान को भी बदल दें और संभव हो तो थोड़ा यज्ञ सेवा में लग जाएँ। इससे वो प्रभाव खत्म हो जाएगा।

सचमुच तो ज्ञानी वही है जो स्वयं को व्यर्थ संकल्प से मुक्त कर सके। इसी के लिए बाबा कहते आए कि तुम्हें लंबेकाल के अभ्यास की आवश्यकता है क्योंकि बिना लंबेकाल के अभ्यास के हमारी बुद्धि स्थिर नहीं होती, संस्कार नहीं बदलते और व्यर्थ संकल्प भी समाप्त नहीं होते।

आप 21 दिन तक एक साधना करें। वह साधना है - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मैं विजयी रत्न हूँ- ये स्वमान सारे दिन में 108 बार याद करें अर्थात् हर घण्टे में 8-10 बार याद करें। इससे आप सदा के लिए व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जाएँगे।

प्रश्न: योग के प्रयोग अनेक लोग जहाँ-तहाँ कर रहे हैं। इसमें सभी की रुचि और बढ़ जाए इसके लिए कोई सुंदर अनुभव बताईये?

उत्तर: ये सत्य है कि चारों ओर सभी में योग के प्रयोग करने की लगन है क्योंकि सभी इस सत्य को पहचान चुके हैं कि सभी समस्याओं का समाधान योगबल से ही संभव है। कुछ ऐसी भी बीमारियाँ हैं जिनका मेडिकल साइंस में कोई इलाज नहीं, वो भी योगबल से ठीक हो रहे हैं। हम तो यही चाहते हैं कि सभी अपने योगाभ्यास को बढ़ायें और संकल्प शक्ति के द्वारा अनेक समस्याओं का समाधान प्राप्त करें।

अभी-अभी का पूना की एक 7 वर्षीय लड़की का सुंदर अनुभव प्रस्तुत है। उसके पिताजी ने बताया कि इसके हार्ट में 8 एम.एम. का छेद था। डॉक्टर्स ने ऑपरेशन की सलाह दी थी परंतु हमें छोटी बच्ची के ऑपरेशन से डर लगता था और न हमारे पास इतनी सम्पत्ति थी। हमने 21 दिन बच्ची को आत्मा देखकर योगदान दिया और दायें हाथ से प्रतिदिन उसके हार्ट को एनर्जी दी। परिणामत: उसका छेद भर गया। उस परिवार के लिये यह बहुत ही सुखद अनुभव था।

किसी माता ने फोन करके पूछा कि मेरी छोटी लड़की के हाथ में सफेद दाग होने लगे हैं। क्या करूँ? आप जानते हैं कि हाथ में सफेद दाग होना कितनी चिंता की बात है। डॉक्टर्स भी इसका कोई इलाज नहीं कर पाते हैं। उसने एक ग्लास में पानी लेकर चार्ज किया, इस संकल्प से कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। आधा ग्लास पानी बच्ची को पिलाया और आधा ग्लास पानी सफेद दाग पर कई बार लगाया। साथ ही उसके सफेद दागों को इस स्वमान में रहकर दृष्टि दी कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। ये दृष्टि रोज 3 मिनट दी गयी। बस उसके सफेद दाग समाप्त हो गए।

प्रश्न: बाबा कहते हैं अपनी बुद्धि को जहाँ चाहे, जैसे चाहे, जब चाहें और जितने समय के लिये चाहें, स्थिर कर सकें। तुम्हें ऐसा अभ्यास करना चाहिए, इससे तुम्हारी साइलेन्स पावर बहुत बढ़ेगी। हम जानना चाहते हैं कि इसका अर्थ क्या है और किस-किस स्वरूप पर हमें इसका अभ्यास करना चाहिए?

उत्तर: मान लो आप किसी काम में बहुत व्यस्त हैं या किसी समस्या से ग्रस्त हैं और आपको अचानक संकल्प हुआ कि मुझे परमधाम में जाकर बाबा के पास बैठना है और 3 मिनट तक बैठना है, तो आप ऐसा सफलतापूर्वक कर सकें। बुद्धि को जब चाहें, जहाँ चाहें स्थित कर सकें, यही सर्वश्रेष्ठ कला है। इस कला के आ जाने से शेष सारी कलाएँ आ जाती हैं। हमें अपनी बुद्धि को कहाँ-कहाँ स्थिर करने का अभ्यास करना चाहिए? उसमें सर्वप्रथम है हमारा अनादि स्वरूप अर्थात् हम अपने आत्मिक स्वरूप को जितना समय चाहें, देखते रहें। हम सहज ही अशरीरी भाव में स्थित हो जाएँ। दूसरा हमारा स्वरूप है आदि देव स्वरुप। हम दिन में कभी भी अपने सतयुगी स्वरूप को स्पष्ट देख पाएँ। हमारा तीसरा स्वरूप है हमारा पूज्य स्वरुप। हम अपने पूज्य स्वरूप में जितना देर चाहें रह सकें और हम अपने फरिश्ते स्वरूप को स्पष्ट देख सकें और अनुभव कर सकें। इसके अतिरिक्त हम अपनी बुद्धि को परमात्म स्वरूप पर जब चाहें और जितना समय चाहें, स्थिर कर सकें। इसका अभ्यास दिन में 3 बार अवश्य कर लेना चाहिए। ऐसा अभ्यास कर लेने से हमारी बुद्धि स्थिर होने लगेगी और इस अभ्यास में हम सफल हो जायेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

दिवाली में कैसे आये हरियाली?

-ब्र.कु.प्रभा, डिफेन्स कॉलोनी, दिल्ली।

सभी अपने-अपने घरों तथा कपड़ों की सफाई दिवाली के दिन कितनी अच्छी तरह से करते हैं और उसका सिर्फ एक कारण है कि घर में कोई नये मेहमान का आगमन होने वाला है। मान्यता है कि धन की देवी श्रीलक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती हैं और घरों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं। सम्भवतया इसलिए हम सभी सतर्क होकर सहज भाव से सफाई में कोई कोताही नहीं करते। ये भी माना जाता है कि रात्रि के अंतिम प्रहर में मातायें सूप की कर्कश ध्वनि से दरिद्रता को भगाती हैं।

क्या हमनें कभी सोचा है कि श्रीलक्ष्मी के स्वागत या फिर घरों की एक दिन की सफाई से हमारे जीवन में खुशहाली आ सकती है, या हम पूरे वर्ष धन-धान्य से परिपूर्ण रह सकते है? ये तो सिर्फ एक मान्यता है कि दीपावली के दिन ऐसा करने से लक्ष्मी जी खुश हो जाती हैं। परंतु आज का मानव पूर्णत: असमंजस की स्थिति में है कि क्या करूँ ऐसा कि आजीवन हम खुशनसीब बनकर रहें, हमारा जीवन कभी भी बदनसीबी को प्राप्त ना करे। दुविधा के इस आलम में हम आपको कुछ ऐसी बातों से अवगत कराते हैं जिससे शायद आपकी परेशानी दूर हो जाये।

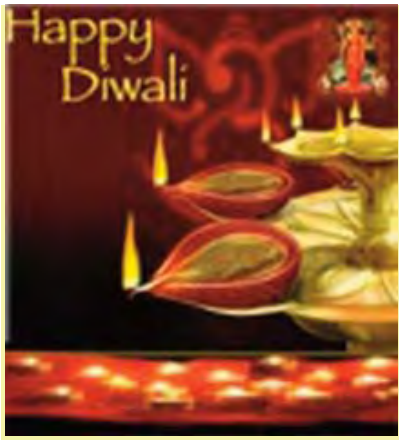

श्री लक्ष्मी के स्वागत में प्रतिवर्ष दीपमाला जलाकर भी भारत आज दरिद्र क्यों है? क्या श्री लक्ष्मी जी हमसे रूठ गई हैं? या फिर उनकी विधि पूर्वक पूजन-अर्चन में कुछ कमी आ गई है? यदि घरों की सफाई, पुताई और मिट्टी के दीपकों को जलाने से लक्ष्मी प्रसन्न हो जातीं तो सदियों से लक्ष्मी का आराधक आज दरिद्र और कंगाल क्यों होता! तथा लक्ष्मी को न मानने वाले अमेरिका, रूस और जापान जैसे समृद्धशाली देश आज आत्मनिर्भर क्यों होते! अब यदि हम उनको आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं तो शायद कहीं कुछ हमारे में ही कमी रह गई है और उस कमी को हमें सबसे पहले जानना होगा।

श्री लक्ष्मी के स्वागत में प्रतिवर्ष दीपमाला जलाकर भी भारत आज दरिद्र क्यों है? क्या श्री लक्ष्मी जी हमसे रूठ गई हैं? या फिर उनकी विधि पूर्वक पूजन-अर्चन में कुछ कमी आ गई है? यदि घरों की सफाई, पुताई और मिट्टी के दीपकों को जलाने से लक्ष्मी प्रसन्न हो जातीं तो सदियों से लक्ष्मी का आराधक आज दरिद्र और कंगाल क्यों होता! तथा लक्ष्मी को न मानने वाले अमेरिका, रूस और जापान जैसे समृद्धशाली देश आज आत्मनिर्भर क्यों होते! अब यदि हम उनको आकर्षित नहीं कर पा रहे हैं तो शायद कहीं कुछ हमारे में ही कमी रह गई है और उस कमी को हमें सबसे पहले जानना होगा।

आज विश्व-मानव परिणाम जनित विचार रखता है और हमेशा परिणामों के तहत किसी भी त्योहार का आंकलन करता है। जैसे ही हम सुविधा ढूंढते हैं वहीं से दुविधा शुरु हो जाती है। आज मनुष्य विषयों के चिंतन में रहता है जिसमें सबसे अधिक- शब्द, रूप, रस, गंध व स्पर्श प्रमुख हैं। जब इन विषयों की अधिकता प्रचुर मात्रा में हो जाती है तो वे विकार बन जाते हैं। वस्तुत: आज मानव इन्हीं विकारों के वशीभूत है। विकारों के वशीभूत होने से ही आत्मा का प्रकाश आज मलीन हो गया है और हम श्री लक्ष्मी को आकर्षित करने में कमज़ोर रह गये। मनुष्य की अंतरात्मा आज इतनी तमसाछन्न है कि श्रीलक्ष्मी तो बहुत दूर की बात है, कोई साधारण मनुष्य भी उससे आकर्षित नहीं होता। ऐसे मनुष्यों के घर में श्रीलक्ष्मी कैसे आ सकती हैं?

कमलापति की कमला के रूप में सुशोभित श्रीलक्ष्मी कमल पुष्प पर विराजित हैं। आज मानव कमल पुष्प की तरह साफ, स्वच्छ और न्यारा नहीं है। वो पूरी तरह से विषय के गटर में पड़ा हुआ है। वैसे भी कहते हैं कि समान मनुष्यों के बीच ही बातचीत होती है। अगर हम असमान हैं तो लक्ष्मी या हरियाली हमारे यहाँ कैसे आ सकती है?

अमावस्या की काली रात की तरह आज मानव के अंदर चतुर्दिक अंधियारा छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है, सभी आत्माओं की ज्योत बुझ चुकी है। सभी एक दिव्य ज्योति की तलाश में हैं कि कहीं से एक ऐसा प्रकाश आ जाये जिससे चहुँ ओर उजाला हो जाये। शास्त्रों में भी इसका उल्लेख है कि श्रीलक्ष्मी जी किसी के भी घर जाने से पहले श्रीनारायण से आज्ञा लेती हैं। अब इसका अर्थ ये हुआ कि श्रीनारायण को जब तक हम प्रसन्न नहीं करेंगे तब तक श्रीलक्ष्मी का आगमन हमारे यहाँ नहीं होगा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ये शिक्षा दी जाती है कि यदि आपको श्रीनारायण का पद प्राप्त करना है तो मनुष्य कर्म से निकलकर देवत्व वाले कर्म करने होंगे। उसके लिए सभी आत्माओं के पिता परमपिता परमात्मा निराकार शिव के साथ संबंध जोड़ने होंगे। इससे हम सम्पूर्ण निर्विकारी बन जायेंगे और हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और संबंध समाप्त हो जायेंगे तथा दैवी स्वभाव-संस्कार आ जायेंगे। इसी के यादगार में शायद व्यापारी लोग इस दिन पुराने खातों को बंद कर नया खाता खोलते हैं। आध्यात्मिकता भी यही कहती है कि हमें आसुरी अवगुणों का खाता बंद करना चाहिए। हम निर्विकारी बन उस परम ज्योति से आत्मा की ज्योति जगाकर सदा के लिए जागती ज्योत बन सकते हैं। इसी का यादगार दीपावली के अवसर पर निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी भी देवी-देवता के मंदिर में दीप सदा नहीं जलता रहता है। इसका मिसाल यह है कि आज भी भगवान विश्वनाथ के मंदिर में अनवरत दीप जलता रहता है जो परमात्मा शिव की जागती ज्योत का प्रतीक है।

दीपावली के दिन हरियाली लाने के लिए लोग जुआ आदि खेलते हैं, कहते हैं कि इससे व्यक्ति की गति बहुत अच्छी होती है। अब भला ऐसा कैसे संभव हो सकता है? जुए में थोड़ी सी सम्पत्ति हम दांव पर लगाते हैं और उससे कई गुणा होकर हमें मिलती है। इसका भी कुछ आध्यात्मिक रहस्य है कि जब पतित पावन परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीव आत्माओं से कहते हैं कि आप अपना कौड़ी तुल्य तन, मन, धन दांव पर लगाओ, अर्थात् सेवा में लगाओ। इससे आपको इक्कीस जन्मों के लिए अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हो जायेगी। दीपावली के सच्चे रहस्यों को न जानने के कारण आज मनुष्य उसे सिर्फ सामाजिक उत्सव के रूप में मनाते हैं और अपना सबकुछ गंवाते हैं। दिवाली, दिवाला निकाल देती है और हरियाली आने के बजाए हम बदहाली में चले जाते हैं।

अब यदि हमें सच्ची दीपावली मनानी है तो ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मंदिर की सफाई कर सदा जागती ज्योत निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति को जगाना होगा और आसुरी अवगुणों का खाता खत्म करना होगा। मन की मनोस्थिति को उन सभी आध्यात्मिक गुणों से, जो हमें सदैव खुशियों की झूले में झुलाते हैं को अपनाना होगा। सारी कुरीतियों को सदा काल के लिए दफन कर हमें आत्म स्वरूप में स्थित रह जागती ज्योत बन विश्व के सभी अधमगति को प्राप्त हुए मनुष्यों की ज्योति जगाकर हरियाली पैदा करनी होगी, तभी सच्ची दीपावली हम मना पायेंगे।

अहमदनगर। भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह को 100 प्रकार के फूलों के गुलदस्ते द्वारा ''भगवान धरती पर आ चुके है'' का संदेश देते हुए ब्र.कु. दीपक।

जयपुर-भवानी नगर। सांसद रामचरण बोहरा को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमा।

फतेहगढ़। ब्रिगेडियर ए.एस. रावत,कमाण्डेंट सिख लाई सेंटर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुमन।

भवानीगढ़-पंजाब। विधानसभा के सांसद सकतर जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.रविंदर।

नोहर-राज.। अलविदा तनाव कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ. विनोद मुंड, ब्र.कु.विजय ब्र.कु.लक्ष्मी तथा अन्य।

दमण-यू.टी.। कलेक्टर गौरवसिंह राजावत को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कांता।

कलाओं के उपयोग से नये समाज की कला होगी विकसित

दादी रतनमोहिनी के साथ अभिनेत्री वर्षा उसगावकर दीप प्रज्वलित करते हुए।

शांतिवन। हमारी संस्कृति हमारे संस्कारों की जननी होती है। जैसी हमारी संस्कृति होगी वैसे ही हमारे संस्कारों का निर्माण होगा। आज कलाओं में फूहड़ता और भद्दापन संस्कृति को बिगाड़ रहे हैं। कलाकार अपनी कलाओं का निर्माण नये समाज के निर्माण के लिए करें। उक्त विचार फिल्म अभिनेत्री वर्षा उसगावकर ने व्यक्त किये। वे ब्रहमाकुमारीज संस्था के शांतिवन में कला एवं संस्कृति प्रभाग की ओर से आयोजित सम्मेलन में बोल रहीं थी। उन्होंने आगे कहा कि कलाकारों की असली लाईफ पर्दे पर दिखने वाली ज़िन्दगी से बिल्कुल अलग होती है। इसलिए दर्शकों को कभी भी वास्तविक लाईफ में केवल सकारात्मक बातों को ही उतारने का प्रयास करना चाहिए। फिल्मों एवं अन्य धारावाहिकों का केवल मकसद समाज में सकारात्मकता फैलाना है।

ब्रहमाकुमारीज संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि मनुष्य के अन्दर श्रेष्ठ मूल्यों एवं कलाओं का विकास ही मनुष्य की असली शोभा होती है। इसलिए मनुष्य को मूल्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

कला एवं संस्कृति प्रभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्र.कु. रमेश शाह ने कहा कि इस प्रभाग का लक्ष्य कलाकारों के द्वारा नये समाज की स्थापना करना है। ऐसे में जरूरी है कि हम इसमें सहयोग करें। इस अवसर पर भारतीय विद्या भवन मुम्बई के निर्देशक कमलेश मोटा, प्रभाग की नेशनल को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. कुसुम, मुम्बई की ब्र.कु. नीहा, ब्र.कु. सतीश समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये।

रशिया में आध्यात्मिकता के प्रति बढ़ा रुझान

सेन्ट पीटर्सबर्ग-रशिया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी का रशिया पहुंचने पर रशियन संस्कृति के साथ ब्र.कु. भाई-बहनों से ज़ोरदार स्वागत किया।

रशिया के मॉस्को शहर में सेवाकेन्द्र की रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें रशिया के भारतीय राजदूत ने सेवाकेन्द्र पर ब्रह्माकुमारी संस्था की सेवाओं की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। भारतीय राजदूत ने दादी से मुलाकात की और भारतीय संस्कृति के अनुरूप मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने की बात पर बल दिया। दादी ने उन्हें विश्व भर में तीव्र गति से हो रही सेवाओं से अवगत कराया।

से सेन्ट पीटर्सबर्ग पहुंचने पर रशिया ज़ोन के विभिन्न देशों के करीब 25 शहरों से आए 175 भाई-बहनों ने बड़ी धूमधाम से रशियन संस्कृति के अनुरूप दादी की विशेषताओं और सेवाओं को दर्शाते हुए संगीत के साथ नृत्य करते दादी का भरपूर स्वागत किया। यहीं पर दो कुमारियों का समर्पण समारोह आकर्षण का केन्द्र रहा। पाश्चात्य संस्कृति का बोलबाला होने के बावजूद दो कुमारियों

रशिया में आध्यात्मिकता के कई कार्यक्रमों का आयोजन

सेन्ट पीटर्सबर्ग-रशिया। यूनिवर्सिटी ऑफ फण्डामेंटल स्ट्डीज़ (आईएफयूएस) के कुलपति दादी रतनमोहिनी को ग्रांड डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी की ऑनरेरी डिग्री प्रदान करते हुए। साथ में ब्र.कु.संतोष, ब्र.कुचक्रधारी तथा ब्र.कु.विजय ।

के समर्पण होने पर उन्हें दादी के समक्ष ईश्वरीय मर्यादाओं के अनुकूल विधिपूर्वक शपथ दिलाई गई। इसी श्रृंखला में भव्यतम् महल के रूप में लाइट हाउस सेवाकेन्द्र की नवनिर्मित दूसरी मंजिल माइट हाउस का दादी ने विधिवत् उद्घाटन किया, जो भाई-बहनों के अथक सहयोग से कम समय में तैयार किया गया। जिसके तहत 500 लोगों की क्षमता वाला एक हॉल, 50 लोगों की आवासीय व्यवस्था, मिनी हॉल, मीटिंग हॉल, मीटिंग रूम, 200 लोगों की क्षमता वाले तीन डायनिंग रूम आदि की व्यवस्था है।इस मौके पर इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ फण्डामेंटल स्ट्डीज़ (आईएफयूएस) के कुलपति ने दादी जानकी की और दादी रतनमोहिनी को ग्रांड डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी की ऑनरेरी डिग्री प्रदान की। सेंट पीटर्सबर्ग प्रशासन के अधीन एक सामाजिक संस्था के प्रजीडेंट ने दादी को विद्यालय द्वारा मानवीय मूल्यों के निर्माण के लिए की जाने वाली सेवा को देखते हुए एक ट्रॉफी प्रदान की। इस अवसर पर ब्र.कु.चक्रधारी, ब्र.कु.संतोष तथा कई समजसेवी संस्थान के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

मूल्यनिष्ठ समाज के लिए मूल्य आधारित होना होगा

पन्ना-म.प्र.। मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में अपने योगदान के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए पत्रकारों के साथ ब्र.कु.सीता, ब्र.कु.गंगाधर व ब्र.कु.अनुज।

पन्ना-म.प्र.। मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में मीडिया की भूमिका को लेकर मीडिया संगोष्ठी का आयोजन किया गया। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रुप में सुशोभित मीडिया आज अपने उत्तरदायित्व से कहीं ना कहीं विमुख है। उसका कारण मीडिया का व्यवसायिकरण होना है। अपने स्वहित के कारण आज मीडिया उन बातों को कहती है जो प्रमुखतया अनर्गल हैं। आज मीडिया जागरुक नहीं है क्योंकि वो मूल्यों और मानदण्डों को भूल चुकी है, इसलिए उसे जागरुक बनाने के लिए अपने को मूल्याधारित करना होगा, तभी एक मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में आप अपना योगदान दे सकते हैं। उपरोक्त विचार ओमशान्ति मीडिया के संपादक ब्र.कु. गंगाधर ने पत्रकारों से मुखातिव होते हुए दिए।

उन्होंने कहा कि आज समाज के सामने उपस्थित अनेक चुनौतियों को भातृत्व भाव से पारस्परिक सद्भाव के साथ मिल-जुलकर दूर किया जा सकता है। संगोष्ठी में नई दिल्ली के युवा पत्रकार ब्र.कु. अनुज ने कहा कि पत्रकारों को जहां एक ओर अपनी लेखनी में सामाजक मूल्यों की अभिव्यक्ति देने की ज़रूरत है वहीं दूसरी ओर मूल्यों को कायम रखने के लिए सत्य पर आधारित विषय वस्तु को प्रकट करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए।

इस अवसर पर भोपाल के वरिष्ठ पत्रकार मधुकर द्विवेदी ने कहा कि मीडिया के क्षेत्र में मूल्यों की स्थापना के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयास स्तुत्य हैं और इस वास्तविकता से पूरा मीडिया जगत वाकिफ हो चुका है। भोपाल से आये ज्ञानवीणा पत्रिका के संपादक ब्र.कु. श्रीप्रकाश ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज चारों तरफ व्याप्त अशांति के वातावरण में सुख और शांति की प्राप्ति के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था ने पूरे दुनिया में अलख जगाई है। इस कार्यक्रम में ब्र.कु. निर्मला,रीवा, ब्र.कु. शीला,सतना, ब्र.कु.सीता,पीस पार्क,सतन, ब्र.कु. प्रकाश,रीवा व मीडिया जगत के कई पत्रकार उपस्थित थे।

बदलना है आचार तो मन के साथ करें सच्चा व्यापार

सतना। पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.अनुज, ब्र.कु गंगाधर, ब्र.कु.प्रकाश ब्र.कु.निर्मला, ब्र.कु.श्रीप्रकाश, मधुकर द्विवेदी, ब्र.कु.सीता तथा अन्य।

सतना (म.प्र.)। समाज में व्यापारियों को सहज रीति से जीवन जीने तथा उसमें सहज राजयोग का पुट डालकर उसे और मूल्यवान बनाने हेतु इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ। बिंध्य में बसे एक छोटे से जिले सतना के लगभग 300 से अधिक व्यापारियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। प्रमुख वक्ता के रूप में पधारे ब्र.कु. गंगाधर ने कहा की आप सब निश्चित रूप से अपने कार्यक्रम में बहुत व्यस्त रहते हैं। उस व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालना थोड़ा सा मुश्किल लगता है। लेकिन जिस तरह से शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, वैसे ही आप सबको अपनी दिनचर्या से थोड़ा समय अपनी आत्मा के लिए भी निकालना चाहिए क्योंकि आत्मा ही शरीर का संचालन करती है। अगर उसे हम सही खुराक ना दें तो वो कमजोर हो जाएगी। इसलिए --शेष पेज 3 पर

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 4th Oct 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।